अक़बा की पहली बैअत[1]

हम बता चुके हैं कि नुबूवत के ग्यारहवें साल हज के मौसम में यसरिब के छः आदमियों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया था और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वायदा किया था कि अपनी क़ौम में जाकर आपकी रिसालत का प्रचार करेंगे।

इसका नतीजा यह हुआ कि अगले साल जब हज का मौसम आया (यानी ज़िलहिज्जा सन् 12 नववी, मुताबिक़ जुलाई 621 ई०) तो बारह आदमी आपकी सेवा में उपस्थित हुए, इनमें हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह को छोड़कर बाक़ी पांच वही थे, जो पिछले साल भी आ चुके थे और इनके अलावा सात आदमी नए थे, जिनके नाम ये हैं—

1. मुआज़ बिन हारिस बिन अफ़रा, क़बीला बनी नज्जार (ख़ज़रज)
2. ज़कवान बिन अब्दुल क़ैस, क़बीला बनी ज़ुरैक़ (ख़ज़रज)
3. उबादा बिन सामित, क़बीला बनी ग़नम (ख़ज़रज)
4. यज़ीद बिन सालबा, क़बीला बनी ग़नम के मित्र (ख़ज़रज)
5. अब्बास बिन उबादा बिन नज़ला, क़बीला बनी सालिम (ख़ज़रज)
6. अबुल हैसम बिन तैहान, क़बीला बनी अब्दुल अशहल (औस)
7. उवैम बिन साइदा, क़बीला बनी अम्र बिन औफ़ (औस)

इनमें से सिर्फ़ आख़िरी दो आदमी औस क़बीले से थे, बाक़ी सबके सब क़बीला ख़ज़रज से थे।[2]

---

1. अक़बा पहाड़ की घाटी यानी तंग पहाड़ी रास्ते को कहते हैं। मक्का से मिना आते-जाते हुए मिना के पश्चिमी किनारे पर एक तंग पहाड़ी रास्ते से गुज़रना पड़ता था। यही रास्ता अक़बा के नाम से मशहूर है। ज़िलहिज्जा की दसवीं तारीख़ को जिसमें जमरा को कंकरी मारी जाती है, वह इसी रास्ते के सिरे पर वाक़े है, इसलिए इसे जमरा अक़्बा कहते हैं। इस जमरा का दूसरा नाम जमरा कुबरा भी है। बाक़ी दो जमरे इससे पूरब में थोड़ी दूरी पर वाक़े हैं। चूंकि मिना का पूरा मैदान जहां हाजी लोग ठहरते हैं इन तीनों जमरों के पूरब में है, इसलिए सारी चहल पहल इधर ही रहती थी और कंकरियां मारने के बाद उस ओर लोगों के आने-जाने का सिलसिला ख़त्म हो जाता है। इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बैअत लेने के लिए इस घाटी को चुना और इसी के ताल्लुक़ से इसको अक़्बा की बैअत कहते हैं। अब पहाड़ काट कर यहां चौड़ी-चौड़ी सड़कें निकाल ली गई हैं।
2. इब्ने हिशाम 1/431-433

इन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिना में अक़बा के पास मुलाक़ात की और आपसे कुछ बातों पर बैअत की। ये बातें वही थी जिन पर आगे हुदैबिया के समझौते के बाद और मक्का की विजय के वक़्त औरतों से बैअत ली गई।

अक़बा की इस बैअत का विवरण सही बुख़ारी में हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० की रिवायत से मिलता है। वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, आओ, मुझसे इस बात पर बैअत करो कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करोगे, चोरी न करोगे, ज़िना न करोगे, अपनी औलाद को क़त्ल न करोगे, अपने हाथ-पांव के बीच से गढ़ कर कोई बोहतान न लाओगे और किसी भली बात में मेरी नाफ़रमानी न करोगे।

जो व्यक्ति ये सारी बातें पूरी करेगा, उसका बदला अल्लाह पर है और जो व्यक्ति इनमें से कोई चीज़ कर बैठेगा, फिर उसे दुनिया ही में उसकी सज़ा दे दी जाएगी, तो यह उसके लिए कफ़्फ़ारा होगी और जो व्यक्ति इनमें से कोई चीज़ कर बैठेगा, फिर अल्लाह उस पर परदा डाल देगा, तो उसका मामला अल्लाह के हवाले है, चाहेगा तो सज़ा देगा और चाहेगा तो माफ़ कर देगा।

हज़रत उबादा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमने इस पर आपसे बैअत की।[1]

मदीना में इस्लाम का दूत (सफ़ीर)

बैअत पूरी हो गई और हज ख़त्म हो गया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन लोगों के साथ यसरिब में अपना पहला दूत (सफ़ीर) भेजा, ताकि वह मुसलमानों को इस्लामी हुक्मों की शिक्षा दे और उन्हें दीन की बातें बताए और जो लोग अब तक शिर्क पर चले आ रहे हैं, उनमें इस्लाम की इशाअत करे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसके लिए पहले इस्लाम क़ुबूल करने वालों में से एक जवान को चुना, जिसका शुभ नाम मुसअब बिन उमैर अब्दरी रज़ियल्लाहु अन्हु है।

ज़बरदस्त कामियाबी

हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना पहुंचे, तो हज़रत असद बिन ज़ुरारा रज़ि० के घर उतरे। फिर दोनों ने मिलकर यसरिब वालों में पूरे

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब बाद हलावतिल ईमान 1/7, बाब वफ़ूदुल अंसार 1/550-551, बाब क़ौलुहूतआला इज़ा जा-अ-कल मोमिनाति 2/727 बाब अल-हुदूद कफ़्फ़ारा 2/1003

उत्साह के साथ इस्लाम की तब्लीग़ (प्रचार) शुरू कर दी।

हज़रत मुस्अब मुक़री की उपाधि से पहचाने जाने लगे। (मुक़री का अर्थ है पढ़ाने वाला। उस वक़्त अध्यापक या गुरु को मुक़री कहते थे।)

तब्लीग़ (प्रचार) के सिलसिले में उनकी सफलता की एक बहुत ही शानदार घटना यह है कि एक दिन हज़रत असद बिन ज़ुरारा रज़ि० उन्हें साथ लेकर बनी अब्दुल अशह्ल और बनी ज़फ़र के मुहल्ले में तशरीफ़ ले गए और वहां बनी ज़फ़र के एक बाग़ के अंदर मर्क़ नामी एक कुंएं पर बैठ गए। उनके पास कुछ मुसलमान भी जमा हो गए। उस वक़्त तक बनी अब्दुल अशह्ल के दोनों सरदार यानी हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० और हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० मुसलमान नहीं हुए थे, बल्कि शिर्क ही पर थे।

उन्हें जब ख़बर हुई तो हज़रत साद ने हज़रत उसैद से कहा कि ज़रा जाओ और इन दोनों को, जो हमारे कमज़ोरों को मूर्ख बनाने आए हैं, डांट दो और हमारे मुहल्ले में आने से मना कर दो। चूंकि असद बिन ज़ुरारा मेरी ख़ाला का लड़का है, (इसलिए तुम्हें भेज रहा हूं) वरना यह काम मैं ख़ुद कर लेता।

उसैद ने अपना हथियार उठाया और इन दोनों के पास पहुंचे।

हज़रत असद रज़ि० ने उन्हें आता देखकर हज़रत मुसअब रज़ि० से कहा, 'यह अपनी क़ौम का सरदार इधर आ रहा है। इसके बारे में अल्लाह से सच्चाई अख़्तियार करना।'

हज़रत मुस्अब रज़ि० ने कहा, अगर यह बैठा तो इससे बात करूंगा।

उसैद पहुंचे तो उनके पास खड़े होकर सख़्त-सुस्त कहने लगे, बोले—

'तुम दोनों हमारे यहां क्यों आए हो? हमारे कमज़ोरों को मूर्ख बनाते हो? याद रखो, अगर तुम्हें अपनी जान की ज़रूरत है, तो इससे अलग ही रहो।'

हज़रत मुसअब ने कहा, क्यों न आप बैठें और कुछ सुनें। अगर कोई बात पसन्द आ जाए, तो क़ुबूल कर लें। पसन्द न आए तो छोड़ दें।

हज़रत उसैद रज़ि० ने कहा, 'बात तो ठीक कह रहे हो।' इसके बाद अपना हथियार गाड़ कर बैठ गए।

अब हज़रत मुसअब ने इस्लाम की बात शुरू की और क़ुरआन की तिलावत फ़रमाई। उनका बयान है कि ख़ुदा की क़सम, हमने उसैद के बोलने से पहले ही उनके चेहरे की चमक-दमक से उनके इस्लाम का पता लगा लिया। इसके बाद उन्होंने ज़ुबान खोली तो फ़रमाया—

'यह तो बहुत ही ख़ूब और बहुत ही अच्छा है। तुम लोग किसी को इस दीन में दाख़िल करना चाहते हो, तो क्या करते हो?'

उन्होंने कहा, 'आप नहा लें, कपड़े पाक कर लें, फिर हक़ की गवाही दें, फिर दो रक्अत नमाज़ पढ़ें।'

उन्होंने उठ कर ग़ुस्ल (स्नान) किया, कपड़े पाक किए, कलिमा शहादत अदा किया और दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, फिर बोले, 'मेरे पीछे एक और व्यक्ति है। अगर वह तुम्हारी पैरवी करने वाला बन जाए, तो उसकी क़ौम का कोई आदमी पीछे न रहेगा और मैं उसको अभी तुम्हारे पास भेज रहा हूं।'

(इशारा साद बिन मुआज़ की ओर था।)

इसके बाद हज़रत उसैद ने अपना हथियार उठाया और पलट कर हज़रत साद के पास पहुंचे। वह अपनी क़ौम के साथ महफ़िल में तशरीफ़ रखते थे। (हज़रत उसैद को देखकर) बोले—

'ख़ुदा की क़सम! मैं कह रहा हूं कि यह आदमी तुम्हारे पास जो चेहरा लेकर आ रहा है, यह वह चेहरा नहीं है, जिसे लेकर गया था।'

फिर जब हज़रत उसैद महफ़िल के पास आ खड़े हुए तो हज़रत साद ने उनसे पूछा कि तुमने क्या किया?

उन्होंने कहा, मैंने उन दोनों से बात की, तो ख़ुदा की क़सम! मुझे कोई हरज तो नहीं नज़र आया। वैसे मैंने उन्हें मना कर दिया है और उन्होंने कहा कि हम वही करेंगे, जो आप चाहेंगे।

और मुझे मालूम हुआ है कि बनी हारिसा के लोग असद बिन ज़ुरारा को क़त्ल करने गए हैं और इसकी वजह यह है कि वे जानते हैं कि असद आपकी ख़ाला का लड़का है, इसलिए वे चाहते हैं कि आपका अह्द तोड़ दें।

यह सुनकर साद ग़ुस्से से भड़क उठे और अपना नेज़ा लेकर सीधे उन दोनों के पास पहुंचे, देखा, तो दोनों इत्मीनान से बैठे हैं। समझ गए कि उसैद का मंशा यह था कि आप भी उनकी बातें सुनें, लेकिन यह उनके पास पहुंचे तो खड़े होकर सख़्त-सुस्त कहने लगे, फिर असद बिन ज़ुरारा को सम्बोधित करके बोले—

'ख़ुदा की क़सम, ऐ अबू उमामा! अगर मेरे और तेरे बीच रिश्तेदारी का मामला न होता तो तुम मुझसे इसकी उम्मीद न रख सकते थे। हमारे मुहल्ले में ऐसी हरकतें करते हो, जो हमें गवारा नहीं।'

इधर हज़रत असद ने हज़रत मुसअब से पहले ही से कह दिया था कि ख़ुदा की क़सम! तुम्हारे पास एक ऐसा सरदार आ रहा है जिसके पीछे उसकी पूरी क़ौम है।

अगर उसने तुम्हारी बात मान ली, तो फिर उनमें से कोई भी न पिछड़ेगा।'

इसलिए हज़रत मुस्अब ने हज़रत साद से कहा, क्यों न आप तशरीफ़ रखें और सुनें। अगर कोई बात पसन्द आ गई तो क़ुबूल कर लें और अगर पसन्द न आई तो हम आपकी नापसंदीदा बात को आपसे दूर ही रखेंगे।

हज़रत साद ने कहा, इंसाफ़ की बात कहते हो।

इसके बाद अपना नेज़ा गाड़ कर बैठ गए।

हज़रत मुसअब ने उन पर इस्लाम पेश किया और क़ुरआन की तिलावत की।

उनका बयान है कि हमें हज़रत साद के बोलने से पहले ही उनके चेहरे की चमक-दमक से उनके इस्लाम का पता लग गया। इसके बाद उन्होंने ज़ुबान खोली और फ़रमाया, तुम लोग इस्लाम लाते हो, तो क्या करते हो?

उन्होंने कहा, आप नहा लें, कपड़े पाक कर लें, फिर हक़ की गवाही दें, फिर दो रक्अत नमाज़ पढ़ें।

हज़रत साद ने ऐसा ही किया। इसके बाद अपना नेज़ा उठाया और अपनी क़ौम की महफ़िल में तशरीफ़ लाए।

लोगों ने देखते ही कहा, हम ख़ुदा की क़सम! कह रहे हैं कि हज़रत साद रज़ि० जो चेहरा लेकर गए थे, उसके बजाए दूसरा ही चेहरा लेकर पलटे हैं।

फिर जब हज़रत साद मज्लिस वालों के पास आकर रुके तो बोले, 'ऐ बनी अब्दुल अशहल! तुम लोग अपने अन्दर मेरा मामला कैसा जानते हो?

उन्होंने कहा, आप हमारे सरदार हैं, सबसे अच्छी सूझ-बूझ के मालिक हैं और हमारे रब से बड़े बरकत वाले निगरां हैं।

उन्होंने कहा, अच्छा तो सुनो! अब तुम्हारे मर्दों और औरतों से मेरी बातचीत हराम है, जब तक कि तुम लोग अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० पर ईमान न लाओ।

उनकी इस बात का यह असर हुआ कि शाम होते-होते इस क़बीले का कोई भी मर्द और कोई भी औरत ऐसी न बची, जो मुसलमान न हो गई हो। सिर्फ़ एक आदमी, जिसका नाम उसेरम था, उसका इस्लाम उहुद की लड़ाई तक स्थगित रहा। फिर उहुद के दिन उसने इस्लाम क़ुबूल किया और लड़ाई में लड़ता हुआ काम आ गया। उसने अभी अल्लाह के लिए एक सज्दा भी न किया था।

नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि उसने थोड़ा अमल किया और ज़्यादा अच्छा बदला पाया।

हज़रत मुसअब रज़ि०, हज़रत असद बिन ज़ुरारा रज़ि० ही के घर पर ठहरे रहकर इस्लाम की तब्लीग़ करते रहे, यहां तक कि अंसार का कोई घराना बाक़ी न बचा जिसमें कुछ मर्द और औरतें मुसलमान न हो चुकी हों, सिर्फ़ बनी उमैया बिन ज़ैद और ख़त्मा और वाइल के मकान बाक़ी रह गये थे। प्रसिद्ध कवि क़ैस बिन असलत इन्हीं का आदमी था और ये लोग उसी की बात मानते थे। इस कवि ने खाई की लड़ाई (05 हि०) तक इन्हें इस्लाम से रोके रखा।

बहरहाल हज के अगले मौसम यानी तेहरवें नबवी के साल के हज का मौसम आने से पहले हज़रत मुसअब बिन उमैर की सफलता की ख़ुशख़बरियां लेकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में मक्का तशरीफ़ लाए और आपके यसरिब के क़बीलों के हालात उनकी जंगी और प्रतिरक्षात्मक क्षमताओं और भली योग्यताओं की बातें विस्तार में बताईं।[1]

---

1. इब्ने हिशाम 1/435-438, 2/90 ज़ादुल मआद 2/51

अक़बा की दूसरी बैअत

नुबूवत के तेरहवें साल हज के मौसम (जून सन् 522 ई०) में यसरिब के सत्तर से ज़्यादा मुसलमान हज का फ़र्ज़ अदा करने के लिए मक्का तशरीफ़ लाए। ये अपनी क़ौम के मुश्रिक हाजियों में शामिल होकर आए थे और अभी यसरिब ही में थे या मक्का के रास्ते ही में थे कि आपस में एक दूसरे से पूछने लगे कि हम कब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यों ही मक्के के पहाड़ों में चक्कर काटते, ठोकर खाते और भयभीत बना हुआ छोड़े रखेंगे?

फिर जब ये मुसलमान मक्का पहुंच गए तो परदे के पीछे नबी सल्ल० के साथ बातों का सिलसिला शुरू किया और आख़िरकार इस बात पर सहमत हो गए कि दोनों फ़रीक़ अय्यामे तश्रीक़[1] के बीच के दिन, यानी 12 ज़िलहिज्जा को, मिना में जमरा ऊला यानी जमरा अक़बा के बाद जो घाटी है, उसी में जमा हों और यह मिलन रात के अंधेरे में बिल्कुल ख़ुफ़िया तरीक़े पर हो।

आइए, अब इस तारीख़ी मिलन के हालात, अंसार के एक लीडर की ज़ुबानी सुनें, कि यही वह मिलन है जिसने इस्लाम और बुतपरस्ती की लड़ाई में ज़माने का रुख़ मोड़ दिया।

हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं—

हम लोग हज के लिए निकले। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अय्यामे तश्रीक़ के बीच के दिन अक़बा में मुलाक़ात तै हुई और आख़िरकार वह रात आ गई जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात तै थी। हमारे साथ एक जाने-माने सरदार अब्दुल्लाह बिन हराम भी थे (जो अभी इस्लाम न लाए थे)। हमने उनको साथ ले लिया था, वरना हमारे साथ हमारी क़ौम के जो मुश्रिक थे, हम उनसे अपना सारा मामला ख़ुफ़िया रखते थे। मगर हमने अब्दुल्लाह बिन हराम से बातचीत की और कहा—

'ऐ अबू जाबिर! आप हमारे एक जाने-पहचाने और शरीफ़ सरदार हैं और हम आपको आपकी मौजूदा हालात से निकालना चाहते हैं, ताकि आप कल-कलां को आग का ईंधन न बन जाएं।'

इसके बाद हमने उन्हें इस्लाम की दावत दी और बतलाया कि आज अक़बा में

1. ज़िलहिज्जा महीने की 11, 12, 13 तारीख़ों को 'अय्यामे तश्रीक़' कहते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हमारी मुलाक़ात तै है।

उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और हमारे साथ अक़बा में तशरीफ़ ले गए और नक़ीब (ग्रुप लीडर) भी मुक़र्रर हुए।

हज़रत काब रज़ि० इस घटना को सविस्तार बयान करते हैं और कहते हैं कि हम लोग पहले की तरह उस रात अपनी क़ौम के साथ अपने डेरों में सोए, लेकिन जब तिहाई रात बीत गई तो अपने डेरों से निकल-निकलकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ तैशुदा जगह पर जा पहुंचे। हम इस तरह चुपके-चुपके दबक-दबक कर निकलते थे, जैसे चिड़िया घोंसले से सुकड़ कर निकलती है, यहां तक कि हम सब अक़बा में जमा हो गए।

हमारी कुल तायदाद पचहत्तर थी, तिहत्तर मर्द और दो औरतें—एक उम्मे अम्मारा नसीबा बिन्त काब थीं, जो क़बीला बनू माज़िन बिन नज्जार से ताल्लुक़ रखती थीं और दूसरी उम्मे मनीअ अस्मा बिन्त अम्र थीं, जिनका ताल्लुक़ क़बीला बनू सलमा से था।

हम सब घाटी में जमा होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इन्तिज़ार करने लगे और आख़िर वह लम्हा आ ही गया, जब आप तशरीफ़ ले आए। आपके साथ आपके चचा हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब भी थे। वह अगरचे अभी तक अपनी क़ौम के दीन पर थे, पर चाहते थे कि अपने भतीजे के मामले में मौजूद रहें और उनके लिए पक्का इत्मीनान हासिल कर लें। सबसे पहले बात भी उन्हीं ने शुरू की।[1]

बात शुरू हुई और हज़रत अब्बास ने समझाया

मज्लिस जब पूरी हो गई तो दीनी और फ़ौजी मदद के समझौते को क़तई और आखिरी शक्ल देने के लिए बात शुरू हुई। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत अब्बास ने सबसे पहले ज़ुबान खोली, उनका मतलब यह था कि वह स्पष्ट शब्दों में इस ज़िम्मेदारी की नज़ाकत रख दें, जो इस समझौते के नतीजे में इन लोगों के सर पड़ने वाली थी, चुनांचे उन्होंने कहा—

ख़ज़रज के लोगो! (अरब के आम लोग अंसार के दोनों ही क़बीले यानी ख़ज़रज और औस को ख़ज़रज ही कहते थे) हमारे अन्दर मुहम्मद सल्ल० की जो हैसियत है, वह तुम्हें मालूम है। हमारी क़ौम के जो लोग धार्मिक दृष्टि से हमारी ही जैसी राय रखते हैं, हमने मुहम्मद सल्ल० को उनसे बचाए रखा है।

---

1. इब्ने हिशाम, 1/440-441

वह अपनी क़ौम और अपने शहर में ताक़त, इज़्ज़त और हिफ़ाज़त के अन्दर हैं, मगर वह अब तुम्हारे यहां जाने और तुम्हारे साथ मिलने पर तैयार हो गए हैं, इसलिए अगर तुम्हारा यह ख़्याल है कि तुम उन्हें जिस चीज़ की ओर बुला रहे हो, निभा लोगे और उन्हें उनके विरोधियों से बचा लोगे, तब तो ठीक है, तुमने जो ज़िम्मेदारी उठाई है, उसे तुम जानो, लेकिन अगर तुम्हारा यह अन्दाज़ा है कि तुम उन्हें अपने पास ले जाने के बाद उनका साथ छोड़कर अलग हो जाओगे, तो फिर अभी से उन्हें छोड़ दो, क्योंकि वे अपनी क़ौम और अपने शहर में बहरहाल इज़्ज़त और हिफ़ाज़त से हैं।

हज़रत काब रज़ि० कहते हैं कि हमने अब्बास से कहा कि आपकी बात हमने सुन ली। अब ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप बात कीजिए और अपने लिए और अपने रब के लिए जो समझौते पसन्द करें, कर लीजिए।[1]

इस जवाब से पता चलता है कि इस बड़ी ज़िम्मेदारी को उठाने और उसके ख़तरनाक नतीजों के झेलने के सिलसिले में अन्सार के पक्के इरादे, बहादुरी और ईमान और जोश और इख़्लास का क्या हाल था। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्ल० ने बातचीत की।

आपने पहले क़ुरआन की तिलावत की, अल्लाह की ओर दावत दी और इस्लाम पर उभारा, इसके बाद बैअत हुई।

बैअत की धाराएं

बैअत की घटना इमाम अहमद ने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से सविस्तार रिवायत की है।

हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि हमने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हम आपसे किस बात पर बैअत करें?

आपने फ़रमाया, इस बात पर कि—

1. चुस्ती और सुस्ती, हर हाल में सुनोगे और मानोगे,
2. तंगी और ख़ुशहाली, हर हाल में माल ख़र्च करोगे,
3. भलाई का हुक्म दोगे और बुराई से रोकेगे।
4. अल्लाह की राह में उठ खड़े होगे और अल्लाह के मामले में किसी

---

1. इब्ने हिशाम, 1/441-442

मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न करोगे।

5. और मैं जब तुम्हारे पास आ जाऊंगा, तो मेरी मदद करोगे और जिस चीज़ से अपनी जान और अपने बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करते हो, उससे मेरी भी हिफ़ाज़त करोगे।

और तुम्हारे लिए जन्नत है।[1]

हज़रत काब रज़ि० की रिवायत में—जिसका उल्लेख इब्ने इस्हाक़ ने किया है—सिर्फ़ आख़िरी धारा 5 का उल्लेख है। चुनांचे उसमें कहा गया है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने क़ुरआन की तिलावत, अल्लाह की ओर दावत और इस्लाम पर उभारने के बाद फ़रमाया,

'मैं तुमसे इस बात पर बैअत लेता हूं कि तुम उस चीज़ से मेरी हिफ़ाज़त करोगे, जिससे अपने बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करते हो।'

इस पर हज़रत बरा बिन मारूर रज़ि० ने आपका हाथ पकड़ा और कहा—

'हां, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको सच्चा नबी बनाकर भेजा है, हम यक़ीनन उस चीज़ से आपकी हिफ़ाज़त करेंगे, जिससे अपने बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करते हैं। इसलिए ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप हमसे बैअत लीजिए। हम ख़ुदा की क़सम ! जंग के बेटे हैं और हथियार हमारा खिलौना है। हमारी यही रीति बाप-दादा से चली आ रही है।'

हज़रत काब रज़ि० कहते हैं कि हज़रत बरा रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात कर ही रहे थे कि अबुल हैसम बिन तैहान ने बात काटते हुए कहा—

'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारे और कुछ लोगों यानी यहूदियों के बीच समझौतों की रस्सियां हैं और अब हम इन रस्सियों को काटने वाले हैं, तो कहीं ऐसा तो नहीं होगा कि हम ऐसा कर डालें, फिर अल्लाह आपको ग़लबा दे तो आप हमें छोड़कर अपनी क़ौम की ओर पलट आएं।'

यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुस्कराए, फिर फ़रमाया—

---

1. इसे इमाम अहमद बिन हंबल ने हसन सनद से रिवायत किया है और इमाम हाकिम और इब्ने हब्बान ने यही कहा है। 2/212, बैहक़ी ने सुनने कुबरा में रिवायत किया है 1/1 इब्ने इस्हाक़ ने क़रीब-क़रीब यही चीज़ हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० से रिवायत की है, अलबत्ता उसमें एक धारा बढ़ी हुई है, जो यह है कि हम हुकूमत वालों से हुकूमत के लिए न झगड़ेंगे। देखिए इब्ने हिशाम 1/454

'(नहीं) बल्कि आप लोगों का ख़ून मेरा ख़ून और आप लोगों की बर्बादी मेरी बर्बादी है। मैं आपसे हूं और आप मुझसे हैं। जिससे आप लड़ेंगे, उससे मैं लड़ूंगा, और जिससे आप सुलह करेंगे, उससे मैं सुलह करूंगा।[1]

बैअत की ख़तरनाकी की दोबारा याद देहानी

बैअत की शर्तों के बारे में बातचीत पूरी हो चुकी और लोगों ने बैअत शुरू करने का इरादा किया, तो पहली पंक्ति के दो मुसलमान जो 11 नबवी और 12 नबवी में मुसलमान हुए थे, एक-एक करके उठे, ताकि लोगों के सामने उनकी ज़िम्मेदारी और ख़तरनाकी को अच्छी तरह स्पष्ट करें और ये लोग मामले के सारे पहलुओं को अच्छी तरह समझ लेने के बाद ही बैअत करें। इससे यह भी मालूम करना था कि क़ौम किस हद तक कुर्बानी देने के लिए तैयार है।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि जब लोग बैअत के लिए जमा हो गए, तो हज़रत अब्बास विन उबादा बिन नज़्ला ने कहा—

'तुम लोग जानते हो कि इनसे (इशारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर था) किस बात पर बैअत कर रहे हो?'

आवाज़ें : जी हां।

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, तुम इनसे लाल और काले लोगों से लड़ने पर बैअत कर रहे हो। अगर तुम्हारा यह ख़्याल हो कि जब तुम्हारे मालों का सफ़ाया कर दिया जाएगा, और तुम्हारे सज्जन क़त्ल कर दिए जाएंगे, तो तुम इनका साथ छोड़ दोगे, तो अभी से छोड़ दो, क्योंकि अगर तुमने उन्हें ले जाने के बाद छोड़ दिया, तो यह दुनिया और आख़िरत की रुसवाई होगी और अगर तुम्हारा यह ख़्याल है कि तुम माल की तबाही और सज्जनों के क़त्ल के बावजूद वायदा निभाओगे, जिसकी ओर तुमने उन्हें बुलाया है, तो फिर बेशक तुम इन्हें ले लो, क्योंकि ख़ुदा की क़सम, यह दुनिया और आख़िरत की भलाई है।'

इस पर सब ने एक आवाज़ होकर कहा—हम माल की तबाही और सज्जनों के क़त्ल का ख़तरा मोल लेकर इन्हें क़ुबूल करते हैं। हां, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हमने यह वायदा निभाया, तो हमें इसके बदले में क्या मिलेगा?

आपने फ़रमाया, जन्नत।

लोगों ने अर्ज़ किया, अपना हाथ फैलाइए।

---

1. इब्ने हिशाम 1/442

आपने हाथ फैलाया और लोगों ने बैअत की ।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि उस वक़्त हम बैअत करने उठे तो हज़रत असद बिन ज़ुरारा ने, जो इन सत्तर आदमियों में सबसे कम उम्र थे—आपका हाथ पकड़ लिया और बोले—

'यसरिब वालो ! तनिक ठहर जाओ !

हम आपकी सेवा में ऊंटों के कलेजे मार कर (यानी लम्बा-चौड़ा सफ़र करके) इस यक़ीन के साथ हाज़िर हुए हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं। आज आपको यहां से ले जाने का मतलब है, सारे अरब से दुश्मनी, तुम्हारे चुने सरदारों का क़त्ल और तलवारों की मार, इसलिए अगर यह सब कुछ बरदाश्त कर सकते हो, तब तो इन्हें ले चलो, और तुम्हारा बदला अल्लाह पर है और अगर तुम्हें अपनी जान प्यारी है, तो इन्हें अभी से छोड़ दो। यह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा क़ाबिले क़ुबूल बहाना होगा ।[2]

बैअत पूरी हो गई

बैअत की धाराएं पहले ही तै हो चुकी थीं, एक बार इस नाज़ुक काम का स्पष्टीकरण भी हो चुका था। अब यह ताकीद आगे की गई तो लोगों ने एक आवाज़ होकर कहा—

असद बिन ज़ुरारह ! अपना हाथ हटाओ, ख़ुदा की क़सम ! हम इस बैअत को न छोड़ सकते हैं और न तोड़ सकते हैं ।[3]

इस जवाब से हज़रत असद को अच्छी तरह मालूम हो गया कि क़ौम किस हद तक इस राह में जान देने को तैयार है।

वास्तव में हज़रत असद बिन ज़ुरारह, हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० के साथ मिलकर मदीने में इस्लाम के सबसे बड़े प्रचारक थे, इसलिए स्वाभाविक रूप से ही वही इन बैअत करने वालों के धार्मिक नेता भी थे और इसीलिए सबसे पहले उन्हीं ने बैअत भी की।

चुनांचे इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है कि बनू नज्जार कहते हैं कि अबू उमामा असद बिन ज़ुरारह सबसे पहले आदमी हैं जिन्होंने आपसे हाथ मिलाया ।[4] और

---

1. इब्ने हिशाम 1/446
2. मुस्नद अहमद, हज़रत जाबिर से 3/322, बैहक़ी, सुनने कुब्रा 9/9
3. वही,
4. इब्ने इस्हाक़ का यह भी बयान है कि बनू अब्दुल अशहल कहते हैं कि सबसे पहले

इसके बाद आम बैअत हुई।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि हम लोग एक-एक आदमी करके उठे और आपने हमसे बैअत ली और उसके बदले जन्नत की ख़ुशख़बरी दी।[1]

बाक़ी रहीं वे औरतें, जो इस मौक़े पर हाज़िर थीं, तो उनकी बैअत सिर्फ़ ज़ुबानी हुई। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी किसी अनजानी औरत से मुसाफ़ा नहीं किया।[2]

बारह नक़ीब

बैअत पूरी हो चुकी तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह प्रस्ताव रखा कि बारह सरदार चुन लिए जाएं, जो अपनी-अपनी क़ौम के 'नक़ीब' हों, और इस बैअत की धाराओं को लागू करने के लिए अपनी क़ौम की ओर से वही ज़िम्मेदार और मुकल्लफ़ हों।

आपका इर्शाद था कि आप लोग अपने भीतर से बारह नक़ीब पेश कीजिए, ताकि वही लोग आपकी अपनी-अपनी क़ौम के मामलों के ज़िम्मेदार हों। आपके इर्शाद पर तुरन्त ही नक़ीबों का चुनाव अमल में आ गया। नौ ख़ज़रज से लिए गए और तीन औस से। नाम इस तरह हैं—

ख़ज़रज के नक़ीब— 1. असद बिन ज़ुरारा बिन अदस,

2. साद बिन रबीअ बिन अम्र,

3. अब्दुल्लाह बिन रुवाहा बिन सालबा,

4. राफ़ेअ बिन मालिक बिन अजलान,

5. बरा बिन मारूर बिन सख़्र

6. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम,

7. उबादा बिन सामित बिन क़ैस,

अबुल हैसम बिन तैहान ने बैअत की और हज़रत काब बिन मालिक कहते हैं कि बरा बिन मारूर ने की (इब्ने हिशाम 1/447) मेरा विचार है कि संभव है बैअत से पहले नबी सल्ल० से हज़रत अबुल हैसम और बरा की जो बातें हुई थीं, लोगों ने उसी को बैअत मान लिया हो, वरना उस वक़्त आगे बढ़ाए जाने के सबसे ज़्यादा हक़दार हज़रत असद बिन ज़ुरारह ही थे। वल्लाहु आलम।

1. मुस्नद अहमद, 3/322
2. देखिए सहीह मुस्लिम बाब कैफ़ीयतुबैअतिन्निसाइ 2/131

8. साद बिन उबादा बिन वलीम,

9. मुन्ज़िर बिन अम्र बिन ख़नीस,

औस के नक़ीब— 1. उसैद बिन हुज़ैर बिन समाक,

2. साद बिन ख़ैसमा बिन हारिस,

3. रिफ़ाआ बिन अब्दुल मुंज़िर बिन ज़ुबैर ।[1]

जब इन नक़ीबों को चुन लिया गया, तो इनसे सरदार और ज़िम्मेदार होने की हैसियत से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक और वचन लिया। आपने फ़रमाया—

'आप लोग अपनी क़ौम के तमाम लोगों के निगरां हैं जैसे हवारी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ओर से निगरां हुए थे और मैं अपनी क़ौम यानी मुसलमानों का निगरां हूं।'

उन सबने कहा, जी हां ।[2]

शैतान समझौते का पता देता है

समझौता पूरा हो चुका था और अब लोग बिखरने ही वाले थे कि एक शैतान को इसका पता लग गया। चूंकि यह भेद बिल्कुल अन्तिम क्षणों में खुला था और इतना मौक़ा न था कि यह ख़बर चुपके से क़ुरैश को पहुंचा दी जाए और वे अचानक इस सभा में शरीक लोगों पर टूट पड़ें और उन्हें घाटी ही में जा लें, इसलिए इस शैतान ने झट एक ऊंची जगह खड़े होकर पूरी ऊंची आवाज़ से, जो शायद ही कभी सुनी गई हो, यह पुकार लगाई—

'ख़ेमे वालों! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखो। इस वक़्त विधर्मी उसके साथ हैं और तुमसे लड़ने के लिए जमा हैं।'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

'यह इस घाटी का शैतान है। ऐ अल्लाह के दुश्मन! सुन, अब मैं तेरे लिए जल्द ही फ़ारिग़ हो रहा हूं।'

इसके बाद आपने लोगों से फ़रमाया कि वे अपने डेरों को चले जाएं ।[3]

---

1. ज़ुबैर ब पर सम्मिलित, कुछ लोगों ने ब की जगह न कहा है यानी ज़ुनैर। कुछ लोगों ने रिफ़ाआ के बदले अबुल हैसम बिन तैहान का नाम लिखा है।
2. इब्ने हिशाम 1/443, 444, 446
3. इब्ने हिशाम, 1/447, जादुल मआद 2/51

क़ुरैश पर चोट लगाने के लिए अंसार की मुस्तैदी

इस शैतान की आवाज़ सुनकर हज़रत अब्बास बिन उबादा बिन नज़ला ने फ़रमाया—

'उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, आप चाहें तो हम कल मिना वालों पर अपनी तलवारों के साथ टूट पड़ें।'

आपने फ़रमाया, हमें इसका हुक्म नहीं दिया गया है। पस आप लोग अपने डेरों में चले जाएं, इसके बाद लोग वापस जाकर सो गए, यहां तक कि सुबह हो गई।[1]

यसरिब के सरदारों से क़ुरैश का विरोध

यह ख़बर क़ुरैश के कानों तक पहुंची तो बड़े दुखी हुए, एक हंगामा मच गया, क्योंकि इस जैसी बैअत का जो परिणाम उनकी जान व माल के ताल्लुक़ से निकल सकता था और जो नतीजे सामने आ सकते थे, इसका उन्हें अच्छी तरह अन्दाज़ा था।

चुनांचे सुबह होते ही उनके सरदार और बड़े चौधरियों के एक बड़े दल ने इस समझौते के ख़िलाफ़ कड़े विरोध के लिए यसरिब वालों के खेमों का रुख़ किया और यों अपने दिल की भड़ास निकाली—

'ख़ज़रज के लोगो! हमें मालूम हुआ है कि आपके लोग हमारे इस साहब को हमारे बीच से निकाल ले जाने के लिए आए हैं और हमसे लड़ाई करने के लिए उसके हाथ पर बैअत कर रहे हैं, हालांकि कोई अरब क़बीला ऐसा नहीं जिससे लड़ाई करना हमारे लिए इतना ज़्यादा नागवार हो, जितना आप लोगों के लिए है।'[2]

लेकिन चूंकि ख़ज़रजी मुश्रिक इस बैअत के बारे में सिरे से कुछ जानते ही न थे, क्योंकि यह पूरी राज़दारी के साथ रात के अंधेरे में हुई थी, इसलिए इन मुश्रिकों ने अल्लाह की क़सम खा-खाकर यक़ीन दिलाया कि ऐसा कुछ हुआ ही नहीं है, हम इस तरह की कोई बात सिरे से जानते ही नहीं।

अन्ततः यह दल अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल के पास पहुंचा। वह भी कहने लगा, यह झूठ है। ऐसा नहीं हुआ है और यह तो हो ही नहीं सकता कि

---

1. इब्ने हिशाम 1/448
2. वही, 1/448

मेरी क़ौम मुझे छोड़कर इस तरह काम कर डाले। अगर मैं यसरिब में होता, तो मुझसे मश्विरा किए बिना मेरी क़ौम ऐसा न करती।

बाक़ी रहे मुसलमान, तो उन्होंने कनखियों से एक दूसरे को देखा और चुप साध ली। इनमें से किसी ने हां या नहीं के साथ ज़ुबान ही नहीं खोली।

आख़िर क़ुरैश के सरदारों का रुझान यह रहा कि मुश्रिकों की बात सच है, इसलिए वह नामुराद वापस चले गए।

ख़बर पर विश्वास हो जाने के बाद. . .

मक्का के सरदार लगभग इस यक़ीन के साथ पलटे थे कि यह ख़बर ग़लत है, लेकिन उसकी कुरेद में वे बराबर लगे रहे, अन्ततः उन्हें यह निश्चित रूप से मालूम हो गया कि ख़बर सही है और बैअत हो चुकी है, लेकिन यह पता उस वक़्त चला जब हज वाले अपने-अपने वतन रवाना हो चुके थे, इसलिए उनके सवारों ने तेज़ रफ़्तारी से यसरिब वालों का पीछा किया, लेकिन मौक़ा निकल चुका था।

अलबत्ता उन्होंने साद बिन उबादा और मुन्ज़िर बिन अम्र को देख लिया और उन्हें जा खदेड़ा, लेकिन मुन्ज़िर ज़्यादा तेज़ रफ़्तार साबित हुए और निकल भागे, अलबत्ता साद बिन उबादा पकड़ लिए गए और उनका हाथ गरदन के पीछे उन्हीं के कजावे की रस्सी से बांध दिया गया, फिर उन्हें मारते-पीटते और बाल नोचते हुए मक्का ले जाया गया, लेकिन वहां मुतइम बिन अदी और हारिस बिन हर्ब बिन उमैया ने आकर छुड़ा दिया, क्योंकि इन दोनों के जो क़ाफ़िले मदीने से गुज़रते थे, वे हज़रत साद रज़ि० ही की पनाह में गुज़रते थे।

इधर अंसार उनकी गिरफ़्तारी के बाद आपस में मश्विरा कर रहे थे कि क्यों न धावा बोल दिया जाए, मगर इतने में वह दिखाई पड़ गए। इसके बाद तमाम लोग ख़ैरियत से मदीना पहुंच गए।[1]

यही अक़बा की दूसरी बैअत है, जिसे अक़बा की बड़ी बैअत कहते हैं।

इस बैअत पर एक ऐसी फ़िज़ा में अमल शुरू हुआ जिसमें मुहब्बत, वफ़ादारी, ईमान वालों के आपसी सहयोग व सहायता, आपसी विश्वास और साहस, धैर्य और वीरता की भावनाएं छाई हुई थीं। चुनांचे यसरिबी मुसलमानों के दिल अपने कमज़ोर मक्की भाइयों की मुहब्बत से लबालब भरे हुए थे। उनके अन्दर इन भाइयों की हिमायत का जोश था और उन पर ज़ुल्म करने वालों पर ग़म व ग़ुस्सा था।

---

1. ज़ादुल मआद 2/51-52, इब्ने हिशाम 1/448-450

उनके सीने अपने उस भाई की मुहब्बत से भरे हुए थे, जिसे देखे बिना सिर्फ़ अल्लाह की ख़ातिर अपना भाई क़रार दे लिया था।

ये भावनाएं किसी सामयिक कारण का नतीजा न थीं, जो दिन गुज़रने के साथ-साथ ख़त्म हो जाती हैं, बल्कि इसका स्रोत अल्लाह पर ईमान, रसूल पर ईमान और किताब पर ईमान था, यानी वह ईमान जो ज़ुल्म व ज़्यादती की किसी बड़ी से बड़ी ताक़त के सामने झुकता नहीं, वह ईमान कि जब उसकी ठंडी हवाएं चलती हैं, तो अक़ीदा व अमल में अनोखी बातें सामने आती हैं। उसी ईमान की बदौलत मुसलमानों के समय के चेहरे पर ऐसे-ऐसे कारनामे अंकित किए और ऐसी-ऐसी निशानियां छोड़ीं कि उनकी नज़ीर अब तक किसी दौर में नहीं मिल सकी है और संभवत: भविष्य में भी न मिल सकेगी।

हिजरत का दौर शुरू

जब अक़बा की दूसरी बैअत पूरी हो गई, इस्लाम, कुफ़्र और जिहालत के फैले हुए निर्जन मरुस्थल में अपने एक वतन की बुनियाद रखने में सफल हो गया और यह सबसे महत्वपूर्ण सफलता थी, जो इस्लाम ने अपनी दावत के आरंभ से अब तक प्राप्त की थो, तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों को इजाज़त दे दी कि वे अपने इस नए वतन की ओर हिजरत कर जाएं।

हिजरत का मतलब यह था कि सारे हितों और स्वार्थों को त्याग कर और माल की क़ुर्बानी देकर सिर्फ़ अपनी जान बचा ली जाए और वह भी यह समझते हुए कि यह जान भी ख़तरे के निशाने पर है और पूरे रास्ते में, शुरू से लेकर आख़िर तक कहीं भी ख़त्म की जा सकती है। फिर सफ़र भी एक अस्पष्ट भविष्य की ओर है। मालूम नहीं आगे चलकर अभी कौन-कौन सी मुसीबतों और परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

मुसलमानों ने यह सब कुछ जानते हुए हिजरत की शुरूआत कर दी। उधर मुश्रिकों ने भी उनकी रवानगी में रुकावटें खड़ी करनी शुरू कीं, क्योंकि वे समझ रहे थे कि इसमें ख़तरे बहुत हैं।

हिजरत के कुछ नमूने पेश किए जाते हैं—

1. सबसे पहले मुहाजिर हज़रत अबू सलमा रज़ि० थे। उन्होंने इब्ने इस्हाक़ के अनुसार अक़बा की बड़ी बैअत से एक साल पहले हिजरत की थी। उनके साथ उनके बीवी-बच्चे भी थे।

जब उन्होंने रवाना होना चाहा, तो उनकी ससुराल वालों ने कहा कि यह रही आपकी जान, इसके बारे में आप हम पर ग़ालिब आ गए, लेकिन यह बताइए कि यह हमारे घर की लड़की, आख़िर किस बुनियाद पर हम आपको छोड़ दें कि आप इसे शहर-शहर घुमाते फिरें?

चुनांचे उन्होंने उनसे उनकी बीवी छीन ली। इस पर अबू सलमा के घरवालों को ताव आ गया और उन्होंने कहा—

'जब तुम लोगों ने इस औरत को हमारे आदमी से छीन लिया, तो हम अपना बेटा उस औरत के पास नहीं रहने दे सकते।'

चुनांचे दोनों फ़रीक़ ने उस बच्चे को अपनी-अपनी ओर खींचा, जिससे उसका

हाथ उखड़ गया और अबू सलमा रज़ि० के घर वाले उसको अपने पास ले गए।

ख़ुलासा यह कि अबू सलमा रज़ि० ने अकेले मदीने का सफ़र किया।

इसके बाद उम्मे सलमा रज़ि० का हाल यह था कि वह अपने शौहर के चले जाने और अपने बच्चे से महरूमी के बाद हर दिन सुबह-सुबह अबतह पहुंच जातीं। (जहां यह घटना घटी थी) और शाम तक रोती रहतीं।

इसी हाल में एक साल गुज़र गया। अन्ततः उनके घराने के किसी आदमी को तरस आ गया और उसने कहा कि इस बेचारी को जाने क्यों नहीं देते? इसे ख़ामख़ाही इसके शौहर और बेटे से जुदा कर रखा है।

इस पर उम्मे सलमा से उनके घरवालों ने कहा कि अगर तुम चाहो तो अपने शौहर के पास जाओ।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने बेटे को उसके ददिहाल वालों से वापस लिया और मदीना चल पड़ीं।

अल्लाहु अक्बर! कोई पांच सौ किलोमीटर की दूरी का सफ़र और साथ में अल्लाह का कोई बन्दा नहीं। जब तनईम पहुंचीं तो उस्मान बिन अबी तलहा मिल गया। उसे हालत का विवरण मालूम हुआ तो साथ-साथ चलकर मदीना पहुंचाने ले गया और जब क़ुबा की आबादी नज़र आई तो बोला—

'तुम्हारा शौहर इसी बस्ती में है। इसी में चली जाओ। अल्लाह बरकत दे।'

इसके बाद वह मक्का पलट गया।[1]

2. हज़रत सुहैब रज़ि० ने जब हिजरत का इरादा किया, तो उनसे क़ुरैश के कुफ़्फ़ार ने कहा, तुम हमारे पास आए थे तो दीन-हीन थे, लेकिन यहां आकर तुम्हारा माल बहुत ज़्यादा हो गया और तुम बहुत आगे पहुंच गए। अब तुम चाहते हो कि अपनी जान और अपना माल दोनों लेकर चल दो, तो ख़ुदा की क़सम, ऐसा नहीं हो सकता।

हज़रत सुहैब रज़ि० ने कहा, अच्छा यह बताओ, अगर मैं अपना माल छोड़ दूं, तो तुम मेरी राह छोड़ दोगे?

उन्होंने कहा, हां।

हज़रत सुहैब रज़ि० ने कहा, अच्छा तो फिर ठीक है। चलो, मेरा माल तुम्हारे हवाले।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बात मालूम हुई तो

---

1. इब्ने हिशाम 1/468, 469, 470

आपने फ़रमाया, सुहैब ने नफ़ा उठाया, सुहैब ने नफ़ा उठाया।[1]

3. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु, अय्याश बिन अबी रबीआ और हिशाम बिन आस बिन वाइल ने आपस में तै किया कि फ़्लां जगह सुबह-सुबह इकट्ठे होकर वहीं से मदीना को हिजरत की जाएगी। हज़रत उमर और अय्याश तो निर्धारित समय पर आ गए, लेकिन हिशाम को क़ैद कर लिया गया।

फिर जब ये दोनों मदीना पहुंचकर क़ुबा में उतर चुके तो अय्याश के पास अबू जह्ल और उसका भाई हारिस पहुंचे। तीनों की मां एक थी। इन दोनों ने अय्याश से कहा—

'तुम्हारी मां ने मन्नत मानी है कि जब तक वह तुम्हें देख न लेगी, सर में कंघी न करेगी और धूप छोड़कर साए में न आएगी।'

यह सुनकर अय्याश को अपनी मां पर तरस आ गया।

हज़रत उमर रज़ि० ने यह स्थिति देखकर अय्याश से कहा, 'अय्याश! देखो, ख़ुदा की क़सम, ये लोग तुमको सिर्फ़ तुम्हारे दीन से फ़िले में डालना चाहते हैं। इसलिए इनसे होशियार रहो। ख़ुदा की क़सम! अगर तुम्हारी मां को जुओं ने पीड़ा पहुंचाई, तो वह कंघी कर लेगी और उसे मक्का की कड़ी धूप लगी, तो वह साए में चली जाएगी, पर अय्याश न माने।

उन्होंने अपनी मां की क़सम पूरी करने के लिए इन दोनों के साथ निकलने का फ़ैसला कर लिया। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अच्छा जब यही करने पर तैयार हो तो मेरी यह ऊंटली ले लो। यह बड़ी उम्दा और तेज़ रफ़्तार है, इसकी पीठ न छोड़ना और लोगों की ओर से कोई शक महसूस हो, तो निकल भागना।

अय्याश ऊंटनी पर सवार इन दोनों के साथ निकल पड़े। रास्ते में एक जगह अबू जह्ल ने कहा, भाई! मेरा यह ऊंट तो बड़ा सख़्त निकला, क्यों न तुम मुझे भी अपनी इस ऊंटनी पर पीछे बिठा लो।

अय्याश ने कहा, ठीक है और उसके बाद ऊंटनी बिठा दी।

इन दोनों ने भी अपनी-अपनी सवारियां बिठाई ताकि अबू जह्ल अय्याश की ऊंटनी पर पलट आए।

लेकिन जब तीनों ज़मीन पर आ गए तो ये दोनों अचानक अय्याश पर टूट पड़े और उन्हें रस्सी से जकड़ कर बांध दिया और इसी बंधी हुई हालत में दिन के वक़्त मक्का लाए और कहा कि ऐ मक्का वालो! अपने मूर्खों के साथ ऐसा

---

1. इब्ने हिशाम, 1/477

ही करो जैसा हमने अपने इस मूर्ख के साथ किया है।[1]

हिजरत के लिए पर तौलने वालों के बारे में अगर मुश्रिकों को मालूम हो जाता तो उनके साथ जो व्यवहार करते थे, उसके ये तीन नमूने हैं। लेकिन इन सबके बावजूद लोग आगे-पीछे निकलते ही रहे।

चुनांचे अक़्बा की बड़ी बैअत के केवल दो माह कुछ दिन बाद मक्का में अल्लाह के रसूल सल्ल०, हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत अली रज़ि० के अलावा एक भी मुसलमान बाक़ी न रहा। ये दोनों अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कहने पर रुके हुए थे।

अलबत्ता कुछ ऐसे मुसलमान ज़रूर रह गए थे जिन्हें मुश्रिकों ने ज़बरदस्ती रोक रखा था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी अपना साज़ व सामान तैयार करके रवाना होने के लिए ख़ुदा के हुक्म का इन्तिज़ार कर रहे थे।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० के सफ़र का सामान भी बंधा हुआ था।[2]

सहीह बुख़ारी में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया गया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों से फ़रमाया—

'मुझे तुम्हारी हिजरत की जगह दिखलाई गई है। यह लावे की दो पहाड़ियों के बीच वाक़े एक मरुद्यान है।'

इसके बाद लोगों ने मदीने की ओर हिजरत की।

हब्शा के आम मुहाजिर भी मदीना ही आ गए।

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी मदीना के सफ़र के लिए साज़ व

---

1. हिशाम और अय्याश कुफ़्फ़ार की क़ैद में पड़े रहे। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत फ़रमा चुके तो आपने एक दिन कहा—
   कौन है जो मेरे लिए हिशाम और अय्याश को छुड़ा लाए?
   वलीद बिन वलीद ने कहा, मैं आपके लिए उनको लाने का ज़िम्मेदार हूं।
   फिर वलीद ख़ुफ़िया तौर पर मक्का गए और एक औरत (जो इन दोनों के पास खाना ले जा रही थी) के पीछे जाकर उनका ठिकाना मालूम किया। ये दोनों एक बिना छत के मकान में क़ैद थे। रात हुई तो हज़रत वलीद दीवार फांद कर इन दोनों के पास पहुंचे और बेड़ियां काट कर अपने ऊंट पर बिठाया और मदीना भाग गए। इब्ने हिशाम 1/474-476 और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बीस सहाबा की एक जमाअत के साथ हिज़रत की थी। सहीह बुख़ारी 1/558
2. ज़ादुल मआद 2/52

सामान तैयार कर लिया, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया,

'ज़रा रुके रहो, क्योंकि उम्मीद है मुझे भी इजाज़त दे दी जाएगी।'

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, मेरे बाप आप पर फ़िदा, 'क्या आपको इसकी उम्मीद है?'

आपने फ़रमाया, हां।

इसके बाद अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु रुके रहे, ताकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सफ़र करें।

उनके पास दो ऊंटनियां थीं। उन्हें भी चार महीने तक बबूल के पत्तों का ख़ूब चारा खिलाया।[1]

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब हिजरतुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व अस्हाबुहू 1/553

क़ुरैश की पार्लियामेंट 'दारुन्नदवा' में

जब मुश्रिकों ने देखा कि सहाबा किराम रज़ि० तैयार हो-होकर निकल गए और बाल-बच्चों और माल व दौलत को लाद-फांद कर औस व ख़ज़रज के इलाक़े में जा पहुंचे, तो उनमें बड़ा कोहराम मचा। दुख के पहाड़ टूट पड़े और उन्हें ऐसा रंज हुआ कि ऐसा रंज कभी न हुआ था।

अब उनके सामने एक ऐसा बड़ा और भयानक ख़तरा सामने आ खड़ा हुआ था जो उनकी बुतपरस्ती पर आधारित जीवन और व्यापारिक समाज के लिए किसी चुनौती से कम न था।

मुश्रिकों को मालूम था कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में ज़बरदस्त नेतृत्व और मार्गदर्शन की क्षमता मौजूद है, साथ ही उनका कर्म-वचन भी बड़ा प्रभावी है। साथ ही यह भी मालूम था कि आपके सहाबा (साथी) में धैर्य, दृढ़ता और त्याग-भाव बहुत ज़्यादा है, फिर यह कि औस व ख़ज़रज के क़बीलों में से कितनी ताक़त, क़ुदरत और जंगी सलाहियत है और इन दोनों क़बीलों के बड़ों में सुलह व सफ़ाई की कैसी पाक भावनाएं हैं और वे कई वर्ष तक फैले हुए गृहयुद्ध की कड़ुवाहट चखने के बाद अब आपसी रंज और दुश्मनी को ख़त्म करने पर कितने तैयार हैं।

उन्हें इसका भी एहसास था कि यमन से शाम तक लाल सागर के तट से उनका जो व्यापारिक मार्ग गुज़रता है, उस दृष्टि से मदीना सैनिक महत्व की कितनी अहम जगह पर स्थित है, जबकि शाम देश से मक्का वालों का वार्षिक व्यापार ढाई लाख दीनार सोने के हिसाब से हुआ करता था। ताइफ़ वालों का व्यापार इसके अलावा था और मालूम है कि इस कारोबार का पूरा आश्रय इस पर था कि यह रास्ता शान्तिपूर्ण रहे।

इन बातों से आसानी से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि यसरिब में इस्लामी दावत के जड़ पकड़ने और मक्का वालों के ख़िलाफ़ यसरिब वालों का मोर्चा क़ायम कर लेने की स्थिति में मक्के वालों के लिए कितने ख़तरे थे।

चूंकि मुश्रिकों को इस गम्भीर ख़तरे का पूरा-पूरा एहसास था, जो उनके वजूद के लिए चैलेंज बन रहा था, इसलिए उन्होंने इस ख़तरे का कामियाब से कामियाब इलाज सोचना शुरू किया और मालूम है कि इस ख़तरे की असल बुनियाद इस्लामी दावत के अलमबरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही थे।

मुश्रिकों ने इस मक़्सद के लिए अक़बा की बड़ी बैअत के लगभग ढाई माह बाद 26 सफ़र सन् 14 नबवी, तद० 12 सितम्बर सन् 622 ई०, वृहस्पतिवार[1] को दिन के पहले पहर[2] में मक्के की पार्लियामेंट दारुन्नदवा में इतिहास की सबसे ख़तरनाक मीटिंग हुई और उसमें क़ुरैश के तमाम क़बीलों के नुमाइन्दे जमा हुए। एजेंडा था एक ऐसे प्लान की तैयारी, जिसके मुताबिक़ इस्लामी दावत के अलमबरदार का क़िस्सा जल्द से जल्द पाक कर दिया जाए और इस दावत की रोशनी पूरे तौर पर मिटा दी जाए।

इस ख़तरनाक मीटिंग में क़ुरैशी क़बीलों के विख्यात प्रतिनिधि इस तरह थे—

1. अबू जह्ल बिन हिशाम, क़बीला बनी मख़्ज़ूम से,

2. जुबैर बिन मुतइम, तईमा बिन अदी और हारिस बिन आमिर बनी नौफ़ल बिन अब्दे मुनाफ़ से,

3. शैबा बिन रबीआ, उत्बा बिन रबीआ और अबू सुफ़ियान बिन हर्ब, बनी अब्द शम्स बिन अब्द मुनाफ़ से,

4. नज़्र बिन हारिस, बनी अब्दुद्दार से,

5. अबुल बख़्तरी बिन हिशाम, ज़मआ बिन अस्वद और हकीम बिन हिज़ाम, बनी असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा से,

6. नबीह बिन हिजाज और मुनब्बह बिन हिजाज, बनी सह्म से,

7. उमैया बिन ख़ल्फ़, बनी जम्ह से।

निर्धारित समय पर ये प्रतिनिधि दारुन्नदवा पहुंचे, तो इब्लीस भी एक बूढ़े-बुज़ुर्ग की शक्ल में इबा ओढ़े, रास्ता रोके, दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ।

लोगों ने कहा, यह कहां का शेख़ है?

इब्लीस ने कहा, यह नज्द वालों का एक शेख़ है, आप लोगों का प्रोग्राम

---

1. यह तारीख़ अल्लामा मंसूरपुरी की खोज के अनुसार है जो अंकित है। देखिए रहमतुल लिल आलमीन 1/95, 97, 102, 2/471
2. पहले पहर में इस मीटिंग की दलील इब्ने इस्हाक़ की वह रिवायत है, जिसमें बयान किया गया है कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में इस मीटिंग की ख़बर लेकर आए और आपको हिजरत की इजाज़त दी। इसके साथ सहीह बुख़ारी में दर्ज हज़रत आइशा रज़ि० की इस रिवायत को मिला लीजिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ठीक दोपहर के वक़्त हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि 'मुझे हिजरत की इजाज़त दे दी गई है।' रिवायत सविस्तार आगे आ रही है।

सुनकर हाज़िर हो गया है। बातें सुनना चाहता है और कुछ असंभव नहीं कि आप लोगों को हितैषितापूर्ण मश्विरों से भी महरूम न रखे।

लोगों ने कहा, बेहतर है, आप भी आ जाइए।

चुनांचे इब्लीस भी उनके साथ अन्दर गया।

पार्लियामेंट में नबी सल्ल० के क़त्ल के प्रस्ताव से सब सहमत

मीटिंग ख़त्म हो गई तो प्रस्ताव आने शुरू हुए, ताकि समस्या हल की जा सके। देर तक इसी पर बहस चलती रही।

पहले अबुल अस्वद ने यह प्रस्ताव रखा कि हम इस व्यक्ति को अपने बीच से निकाल दें और देश निकाला दे दें। फिर हमें इससे मतलब नहीं कि वह कहां जाता और कहां रहता है। बस हमारा मामला ठीक हो जाएगा और हमारे भीतर पहले की तरह एकाग्रता और एकरूपता पैदा हो जाएगी।

मगर शेख़ नज्दी ने कहा, नहीं, ख़ुदा की क़सम, यह मुनासिब राय नहीं है। तुम देखते नहीं कि उस व्यक्ति की बात कितनी अच्छी और बोल कितने मीठे हैं और जो कुछ लाता है, उसके ज़रिए से किस तरह लोगों का दिल जीत लेता है। ख़ुदा की क़सम! अगर तुमने ऐसा किया, तो कुछ भरोसा नहीं कि वह अरब के किस क़बीले में जाए और उन्हें अपना पैरवी करने वाला बना लेने के बाद तुम पर धावा बोल दे और तुम्हें तुम्हारे शहर के अन्दर रौंदकर जैसा व्यवहार चाहे करे। इसकी जगह कोई और उपाय सोचो।

अबुल बख़्तरी ने कहा, उसे लोहे की बेड़ियों में जकड़ कर क़ैद कर दो और बाहर से दरवाज़ा बन्द कर दो, फिर उसी अंजाम (मौत) का इन्तिज़ार करो, जो इससे पहले और दूसरे कवियों जैसे ज़ुहैर और नाबग़ा वग़ैरह का हो चुका है।

शेख़ नज्दी ने कहा, नहीं, ख़ुदा की क़सम, यह भी मुनासिब राय नहीं है। ख़ुदा की क़सम! अगर तुम लोगों ने इसे क़ैद कर दिया, जैसा कि तुम कह रहे हो, तो इसकी ख़बर बन्द दरवाज़े से बाहर निकलकर उसके साथियों तक ज़रूर पहुंच जाएगी। फिर कुछ असंभव नहीं कि वे लोग तुम पर धावा बोलकर तुम्हारे क़ब्ज़े से निकाल ले जाएं, फिर उसकी मदद से अपनी तायदाद बढ़ाकर तुम्हें पस्त कर दें। इसलिए यह भी मुनासिब राय नहीं, कोई और प्रस्ताव सोचो।

ये दोनों प्रस्ताव पार्लियामेंट रद्द कर चुकी, तो एक तीसरा अपराधपूर्ण प्रस्ताव रखा गया, जिससे तमाम मेम्बरों ने सहमति दिखाई। इसे प्रस्तुत करने वाला मक्के का सबसे बड़ा अपराधी अबू जह्ल था। उसने कहा—

'उस व्यक्ति के बारे में मेरी एक राय है। मैं देख रहा हूं कि अब तक तुम लोग वहां तक नहीं पहुंचे।'

लोगों ने कहा, अबुल हकम ! वह क्या है ?

अबू जह्ल ने कहा, मेरी राय यह है कि हम हर क़बीले से एक मज़बूत, ऊंचे ख़ानदान का और बांका जवान चुन लें, फिर हर एक को तेज़ तलवार दें। इसके बाद सबके सब उस व्यक्ति का रुख़ करें और इस तरह एक साथ तलवार मार कर क़त्ल कर दें, जैसे एक ही आदमी ने तलवार मारी हो। यों हमें उस व्यक्ति से रहात मिल जाएगी और इस तरह क़त्ल करने का नतीजा यह होगा कि उस व्यक्ति का ख़ून सारे क़बीलों में बिखर जाएगा और अबू अब्द मुनाफ़ सारे क़बीलों से लड़ाई न लड़ सकेंगे। इसलिए दियत (ख़ून बहा) लेने पर राज़ी हो जाएंगे और हम दियत अदा कर देंगे।[1]

शेख़ नज्दी ने कहा, बात यह रही जो इस जवान ने कही। अगर कोई प्रस्ताव और राय हो सकती है, तो यही है। इसके अलावा सब बेकार।

इसके बाद मक्का की पार्लियामेंट ने इस अपराधपूर्ण प्रस्ताव को पास कर दिया और सभी इस दृढ़ संकल्प के साथ अपने घरों को वापस गए कि इस प्रस्ताव को तुरन्त लागू करना है।

---

1. इब्ने हिशाम 1/480-482

नबी सल्ल० की हिजरत

क़ुरैश की चाल और अल्लाह की चाल

उल्लिखित सामाजिकता का स्वभाव यह होता है कि उसे बड़े रहस्य में रखा जाता है और ऊपरी सतह पर कोई ऐसी हलचल सामने नहीं आने दी जाती जो नित्य प्रति से हटकर और आम आदत से हटकर हो, ताकि कोई व्यवित ख़तरे की गंध न सूंघ सके और किसी के दिल में ख़्याल न आए कि यह ख़ामोशी किसी ख़तरे का पता देती है। यह क़ुरैश की चाल या दांव-पेच था, पर यह चाल उन्होंने अल्लाह से चली थी। इसलिए अल्लाह ने उन्हें ऐसे ढंग से विफल किया कि वे सोच भी नहीं सकते थे, चुनांचे जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल का अपराधपूर्ण प्रस्ताव पारित हो चुका तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम अपने रब की वह्य लेकर आपकी सेवा में आए और आपको क़ुरैश के षड्यंत्र की सूचना देते हुए बताया कि अल्लाह ने आपको यहां से हिजरत कर जाने की इजाज़त दे दी और यह कहते हुए हिजरत का समय भी निर्धारित कर दिया कि आप यह रात अपने उस बिस्तर पर न गुज़ारें जिस पर अब तक गुज़ारा करते थे।[1]

इस सूचना के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ठीक दोपहर के वक़्त अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के घर तशरीफ़ ले गए, ताकि उनके साथ हिजरत के सारे प्रोग्राम और मरहले तै फ़रमा लें।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का बयान है कि ठीक दोपहर के वक़्त हम लोग अबूबक्र रज़ि० के मकान में बैठे थे कि किसी कहने वाले ने अबूबक्र रज़ि० से कहा, यह अल्लाह के रसूल सल्ल० सिर ढांके तशरीफ़ ला रहे हैं।

यह ऐसा वक़्त था, जिसमें आप तशरीफ़ नहीं लाया करते थे।

अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान! आप इस वक़्त किसी अहम मामले ही की वजह से तशरीफ़ लाए हैं।

हज़रत आइशा रज़ि० बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए, इजाज़त तलब की। आपको इजाज़त दी गई और आप अन्दर दाख़िल हुए, फिर अबूबक्र रज़ि० से फ़रमाया—

'तुम्हारे पास जो लोग हैं, उन्हें हटा दो।'

---

1. इब्ने हिशाम 1/482, ज़ादुल मआद 2/52 और हिजरत के लिए देखिए बुख़ारी की हदीस न० 476, 2138, 2263, 2264, 2297, 3905, 4093, 5807, 6079

अबूबक्र रज़ि० ने कहा, बस आपकी घरवाली ही है, आप पर मेरे मां-बाप फ़िदा हों, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० !

आपने फ़रमाया, अच्छा तो मुझे चलने की इजाज़त मिल चुकी है।

अबूबक्र रज़ि० ने कहा, साथ. . . ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा हों।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया—हां।[1]

इसके बाद हिजरत का प्रोग्राम तै करके अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर वापस तशरीफ़ ले आए और रात के आने का इन्तिज़ार करने लगे।

अल्लाह के रसूल सल्ल० के मकान का घेराव

इधर क़ुरैश के बड़े अपराधियों ने अपना सारा दिन मक्के की पार्लियामेंट 'दारुन्नदवा' को पहले पहर के पारित प्रस्ताव के लागू करने की तैयारी में गुज़ारा और इस उद्देश्य के लिए उन बड़े अपराधियों में से ग्यारह सरदार चुने गए, जिनके नाम ये हैं—

1. अबू जह्ल बिन हिशाम,
2. हकम बिन आस,
3. उत्बा बिन अबी मुऐत,
4. नज़्र बिन हारिस,
5. उमैया बिन ख़ल्फ़
6. ज़मआ बिन अस्वद,
7. तुऐमा बिन अदी,
8. अबू लहब,
9. उबई बिन ख़ल्फ़
10. नुबैह बिन हिजाज, और
11. उसका भाई मुनब्बह बिन हिजाज।[2]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा था कि आप शुरू रात में इशा की नमाज़ के बाद सो जाते और आधी रात के बाद घर से निकलकर मस्जिदे

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब हिजरतुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 1/553
2. ज़ादुल मआद 2/52

हराम तशरीफ़ ले जाते और वहां तहज्जुद की नमाज़ अदा फ़रमाते। उस रात आपने हज़रत अली रज़ि० को हुक्म दिया कि वह आपके बिस्तर पर सो जाएं और आपकी हरी हज़रमी[1] चादर ओढ़ लें। यह भी बतला दिया कि तुम्हें उनके हाथों कोई चोट नहीं पहुंचेगी। (आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वही चादर ओढ़ कर सोया करते थे।)

इधर रात जब तनिक अंधेरी हो गई, हर ओर सन्नाटा छा गया और आम लोग सोने के लिए जा चुके तो उपरोक्त व्यक्तियों ने ख़ुफ़िया तौर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर का रुख़ किया और दरवाज़े पर जमा होकर घात में बैठ गए। वह हज़रत अली को देखकर समझ रहे थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही सोये हुए हैं। इसलिए इन्तिज़ार करने लगे कि आप उठें और बाहर निकलें तो ये लोग यकायक आप पर टूट पड़ें और तय किया हुआ फ़ैसला लागू करते हुए आपको क़त्ल कर दें।

इन लोगों को पूरा भरोसा और पूरा यक़ीन था कि उनका यह नापाक षड्यंत्र सफल होकर रहेगा, यहां तक कि अबू जह्ल ने दंभ से भरे पूरे घमंड के साथ उपहास करते हुए अपने घेरा डालने वाले साथियों से कहा—

'मुहम्मद (सल्ल०) कहता है कि अगर तुम लोग उसके दीन में दाख़िल होकर उसकी पैरवी करोगे तो अरब व अजम के बादशाह बन जाओगे, फिर मरने के बाद उठाए जाओगे तो तुम्हारे लिए जार्डन के बाग़ों जैसी जन्नतें होंगी और अगर तुमने ऐसा न किया तो उनकी ओर से तुम्हारे अन्दर ज़िब्ह की घटनाएं सामने आएंगी, फिर तुम मरने के बाद उठाए जाओगे और तुम्हारे लिए आग होगी, जिसमें तुम जलाए जाओगे।[2]

बहरहाल इस षड्यंत्र को लागू करने के लिए आधी रात के बाद का समय निश्चित था। इसलिए ये लोग जाग कर रात गुज़ार रहे थे और निर्धारित समय के आने का इन्तिज़ार कर रहे थे, लेकिन अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है। उसीके हाथ में आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। वह जो सोचता है, करता है। जिसे बचाना चाहे, कोई उसका बाल टेढ़ा नहीं कर सकता और जिसे पकड़ना चाहे, कोई उसको बचा नहीं सकता।

चुनांचे इस मौक़े पर अल्लाह ने वह काम किया जिसे नीचे की आयत में अल्लाह ने रसूल को सम्बोधित करते हुए बयान फ़रमाया है कि—

---

1. हज़रत मौत (दक्षिणी यमन) की बनी हुई चादर हज़रमी कहलाती है।
2. इब्ने हिशाम 1/482, 483

'वह मौक़ा याद करो जब कुफ़्फ़ार तुम्हारे ख़िलाफ़ चाल चल रहे थे, ताकि तुम्हें क़ैद कर दें या क़त्ल कर दें या निकाल बाहर करें और वे लोग दाव चल रहे थे और अल्लाह भी दाव चल रहा था और अल्लाह सबसे बेहतर दाव चलने वाला है।'
(8 : 30)

अल्लाह के रसूल सल्ल० अपना घर छोड़ते हैं

बहरहाल क़ुरैश अपनी योजना के लागू करने की भरपूर तैयारी के बावजूद बुरी तरह परास्त हुए और असफल रहे, क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर से बाहर तशरीफ़ लाए, मुश्रिकों की सफ़ें चीरीं और एक मुट्ठी कंकरियां लेकर उनके सरों पर डालीं, लेकिन अल्लाह ने उनकी निगाहें पकड़ लीं और वे आपको देख न सके। उस वक़्त आप यह आयत तिलावत फ़रमा रहे थे—

'हमने उनके आगे रुकावट खड़ी कर दी और उनके पीछे रुकावट खड़ी कर दी, पस हमने उन्हें ढांक लिया है और वे देख नहीं रहे हैं।' (36 : 9)

इस मौक़े पर कोई भी मुश्रिक बाक़ी न बचा, जिसके सर पर आपने मिट्टी न डाली हो।

इसके बाद आप अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के घर तशरीफ़ ले गए और फिर उनके मकान की एक खिड़की से निकलकर दोनों हज़रात ने रात ही रात यमन का रुख़ किया और कुछ मील पर स्थित सौर नामी पहाड़ की एक गुफा में जा पहुंचे।[1]

इधर घेराव करने वाले शून्य समय का इन्तिज़ार कर रहे थे, लेकिन इससे थोड़ा पहले उन्हें अपनी नाकामी व नामुरादी का ज्ञान हो गया।

हुआ यह कि उनके पास एक ग़ैर-मुताल्लिक़ आदमी आया और उन्हें आपके दरवाज़े पर देखकर पूछा कि आप लोग किस चीज़ का इन्तिक़ार कर रहे हैं?

उन्होंने कहा, मुहम्मद का।

उसने कहा, आप लोग विफल हो गए। ख़ुदा की क़सम, मुहम्मद तो आप लोगों के पास से गुज़रे और आपके सरों पर कंकरी डालते हुए अपना काम कर गए।

उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम, हमने तो उन्हें नहीं देखा। और इसके बाद अपने सरों से मिट्टी झाड़ते हुए उठ खड़े हुए।

फिर दरवाज़े के दराज़ से झांक कर देखा, तो हज़रत अली रज़ि० नज़र

1. वही, 1/483, ज़ादुल मआद 2/52

आए। कहने लगे—

'अल्लाह की क़सम, यह तो मुहम्मद सोए पड़े हैं। उनके ऊपर उनकी चादर मौजूद है।'

चुनांचे वे लोग सुबह तक वहीं डटे रहे।

इधर सुबह हुई और हज़रत अली रज़ि० बिस्तर से उठे, तो मुश्रिकों के हाथों के तोते उड़ गए। उन्होंने हज़रत अली रज़ि० से पूछा कि अल्लाह के रसूल कहां हैं?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मुझे मालूम नहीं।[1]

घर से ग़ार (गुफा) तक

अल्लाह के रसूल 27 सफ़र 14 नबवी मुताबिक़ 12-13 सितंबर 622 ई०[2] की बीच की रात अपने मकान से निकल कर जान व माल के सिलसिले में अपने सबसे विश्वसनीय साथी अबूबक्र रज़ि० के घर तशरीफ़ लाए थे और वहां से पिछवाड़े की एक खिड़की से निकल कर दोनों ने बाहर की राह ली थी, ताकि मक्का से जल्द से जल्द यानी भोर से पहले-पहले बाहर निकल जाएं।

चूंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालमू था कि क़ुरैश पूरी जान लगाकर आपकी खोज में जुट जाएंगे और जिस रास्ते पर पहले हल्ले में नज़र उठेगी, वह मदीने का कारवानी रास्ता होगा जो उत्तर के रुख़ पर जाता है, इसलिए आपने वह रास्ता अपनाया, जो इसके बिल्कुल उलट था, यानी यमन जाने वाला रास्ता जो मक्का के दक्षिण में स्थित है।

आपने उस रास्ते पर कोई पांच मील का रास्ता तै किया और उस पहाड़ के दामन में पहुंचे, जो सौर के नाम से विख्यात है।

यह बहुत ऊंचा, पेचदार और मुश्किल चढ़ाई वाला पहाड़ है। यहां पत्थर भी बहुत पाए जाते हैं, जिनसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दोनों पांव घायल हो गए और कहा जाता है कि आप क़दम के निशान छिपाने के

---

1. वही, वही
2. रहमतुल लिल आलमीन 1/95। सफ़र का यह महीना चौदहवीं सन नुबूवत का उस वक़्त होगा जब सन् की शुरूआत मुहर्रम के महीने से मानी जाए और अगर सन् की शुरूआत उसी महीने से करें जिसमें आप नबी बनाए गए थे, तो सफ़र का यह महीना क़तई तौर पर तेरहवीं सन् नुबूवत का होगा। सीरत लिखने वालों ने आम तौर पर कहीं पहला हिसाब अपनाया है और कहीं दूसरा, जिसकी वजह से वे घटनाओं की तर्तीब में ख़ब्त और ग़लती में पड़ गए हैं। हमने सन् का आरंभ मुहर्रम से माना है।

लिए पंजों के बल चल रहे थे, इसलिए आपके पांव घायल हो गए।

बहरहाल वजह जो भी रही हो, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने पहाड़ के दामन में पहुंचकर आपको उठा लिया और दौड़ते हुए पहाड़ की चोटी पर एक ग़ार के पास जा पहुंचे जो तारीख़ में सौर के ग़ार के नाम से मशहूर है।[1]

ग़ार में

ग़ार के पास पहुंचकर अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ख़ुदा के लिए अभी आप इसमें दाख़िल न हों। पहले मैं दाख़िल होकर देख लेता हूं। अगर उसमें कोई चीज़ हुई तो आपके बजाए मुझे उससे वास्ता पड़ेगा।

चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अन्दर गए और ग़ार को साफ़ किया। एक ओर कुछ सूराख थे, जिन्हें अपना तहबन्द फाड़ कर बन्द किया, लेकिन वे सूराख बाक़ी बचे रहे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने इन दोनों में अपने पांव डाल दिए, फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि अन्दर तशरीफ़ लाएं।

आप अन्दर तशरीफ़ ले गए और हज़रत अबूबक्र रज़ि० की गोद में सर रखकर सो गए।

इधर अबूबक्र रज़ि० के पांव में किसी चीज़ ने डस लिया, मगर इस डर से हिले भी नहीं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जाग न जाएं, लेकिन उनके आंसू अल्लाह के रसूल सल्ल० के चेहरे पर टपक गए (और आपकी आंख खुल गई)।

आपने फ़रमाया, अबूबक्र ! तुम्हें क्या हुआ ?

अर्ज़ किया, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान ! मुझे किसी चीज़ ने डस लिया है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उस पर होंठों का लुआब लगा दिया और तक्लीफ़ जाती रही।[2]

यहां दोनों हज़रात ने तीन रातें यानी शुक्रवार, शनिवार और रविवार की रातें ग़ार में छिप कर गुज़ारीं।[3]

---

1. मुख़्तसरुस्सीरः, लेख शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 167
2. यह बात रज़ीन ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से रिवायत की है। इस रिवायत में यह भी है कि फिर यह ज़हर फूट पड़ा (यानी मौत के वक़्त उसका असर पलट आया) और यही मौत की वजह बना। देखिए मिश्कात 2/556, बाब मनाक़िब अबी बक्र
3. फ़त्हुल बारी 7/336

इस बीच अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे अब्दुल्लाह भी यहीं रात गुज़ारते थे।

हज़रत आइशा रज़ि० का बयान है कि वह गहरी सूझ-बूझ के मालिक, बात समझने वाले नवजवान थे। सुबह के अंधेरे में इन दोनों हज़रात के पास से चले जाते और मक्का में क़ुरैश के साथ यों सुबह करते मानो उन्होंने यहीं रात गुज़ारी है। फिर आप दोनों के ख़िलाफ़ षड्यंत्र की जो कोई बात सुनते, उसे अच्छी तरह याद कर लेते और अंधेरा गहरा हो जाता तो उसकी ख़बर लेकर ग़ार में पहुंच जाते।

उधर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के दास आमिर बिन फ़ुहैरा बकरियां चराते रहते थे और जब रात का एक हिस्सा गुज़र जाता तो बकरियां लेकर उनके पास पहुंच जाते। इस तरह दोनों रात को पेट भरकर दूध पी लेते, फिर सुबह तड़के ही आमिर बिन फ़ुहैरा बकरियां हांक कर चल देते। तीनों रात उन्होंने यही किया।[1]

(साथ ही यह भी कि) आमिर बिन फ़ुहैरा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र को मक्का जाने के बाद उन्हीं के क़दमों के निशान पर बकरियां हांकते थे, ताकि निशान मिट जाएं।[2]

क़ुरैश की दौड़-भाग

उधर क़ुरैश का यह हाल था कि जब क़त्ल की योजना वाली रात गुज़र गई और सुबह को यक़ीनी तौर पर मालूम हो गया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके हाथ से निकल चुके हैं, तो उन पर मानो जुनून तारी हो गया और वे पागल जैसे हो गए।

उन्होंने अपना ग़ुस्सा सबसे पहले हज़रत अली रज़ि० पर उतारा। आपको घसीट कर ख़ाना काबा तक ले गये और एक घड़ी क़ैद में रखा कि मुम्किन है इन दोनों की ख़बर लग जाए।[3]

लेकिन जब हज़रत अली रज़ि० से कुछ न पता चला तो अबूबक्र रज़ि० के घर आए और दरवाज़ा खटखटाया। हज़रत असमा बिन्त अबूबक्र निकलीं।

उनसे पूछा, तुम्हारे बाप कहां हैं?

उन्होंने कहा, ख़ुदा की क़सम, मुझे मालूम नहीं कि मेरे बाप कहां हैं?

---

1. सहीह बुख़ारी, 1/553-554
2. इब्ने हिशाम 1/486
3. तारीख़ तबरी 2/374

इस पर कमबख़्त ख़बीस अबू जह्ल ने हाथ उठा कर इस ज़ोर का थप्पड़ उनके गाल पर मारा कि उनके कान की बाली गिर गई।[1]

इसके बाद क़ुरैश ने एक आपात्कालीन मीटिंग बुलाकर यह तै किया कि इन दोनों को गिरफ़्तार करने के लिए तमाम संभव साधनों का उपयोग किया जाए। चुनांचे मक्का से निकलने वाले तमाम रास्तों पर, चाहे वह किसी भी दिशा में जा रहा हो, बड़ा सशस्त्र पहरा बिठा दिया गया। इसी तरह यह आम एलान भी किया गया कि जो कोई अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को या इनमें से किसी एक को ज़िंदा या मुर्दा हाज़िर करेगा, उसे हर एक के बदले सौ ऊंटों का इनाम दिया जाएगा।[2]

इस एलान के नतीजे में सवार और पैदल और क़दम के निशानों के माहिर खोजी बड़ी सरगर्मी से खोज में लग गए और पहाड़ों, घाटियों और ऊंच-नीच हर ओर फैल गए, लेकिन नतीजा और हासिल कुछ न रहा।

खोजने वाले ग़ार के मुंह तक भी पहुंचे, लेकिन अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है, चुनांचे सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया—

'मैं नबी के साथ ग़ार में था, सर उठाया तो क्या देखता हूं कि लोगों के पांव नज़र आ रहे हैं।'

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! अगर इनमें से कोई आदमी सिर्फ़ अपनी निगाह नीची कर दे तो हमें देख लेगा।

आपने फ़रमाया, अबूबक्र! ख़ामोश रहो। (हम) दो हैं जिनका तीसरा अल्लाह है।

एक रिवायत के शब्द ये हैं—

'अबूबक्र! ऐसे दो आदमियों के बारे में तुम्हारा क्या विचार है, जिनका तीसरा अल्लाह है।'[3]

---

1. इब्ने हिशाम 1/487
2. सहीह बुख़ारी 1/554
3. सहीह बुख़ारी, 1/516, 558, ऐसा ही मुस्नद अहमद 114 में है। यहां यह बात भी याद रखने की है कि अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बेचैनी अपनी जान के डर से न थी, बल्कि एक ही वजह थी जो इस रिवायत में बयान की गई है कि अबूबक्र रज़ि० ने जब खोजी दस्तों को देखा तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए आपका दुख बढ़ गया और आपने कहा कि अगर मैं मारा गया तो मैं सिर्फ़ एक

सच तो यह है कि यह एक मोजज़ा था, जिसे अल्लाह ने अपने नबी को प्रदान किया था। चुनांचे खोजी दस्ते उस वक़्त वापस लौट गये, जब आपके और उनके दर्मियान कुछ क़दम से ज़्यादा दूरी न रह गई थी।

मदीना के रास्ते में

जब खोज की आग बुझ गई, दौड़-भाग रुक गई और तीन दिन की लगातार और बेनतीजा दौड़-धूप के बाद क़ुरैश की उमंग और उत्साह ठंडा पड़ गया तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मदीना के लिए निकलने का इरादा कर लिया। अब्दुल्लाह बिन उरैक़त लैसी से, जो वीरानों और जंगलों के गुज़रने वाले रास्तों का माहिर था, पहले ही मुआवज़े पर मदीना पहुंचाने का मामला तै हो चुका था। यह आदमी अभी क़ुरैश ही के धर्म पर था, लेकिन इत्मीनान के क़ाबिल था, इसलिए सवारियां उसके हवाले कर दी गई थीं और तै हुआ था कि तीन रातें गुज़रने के बाद वह दोनों सवारियां लेकर सौर ग़ार को पहुंच जाएगा।

चुनांचे जब पीर का दिन (सोमवार) आया, जो रबीउल अव्वल सन 01 हि० की चांद रात थी (मुताबिक़ 16 दिसम्बर सन् 622 ई०) तो अब्दुल्लाह बिन उरैक़त सवारियां लेकर आ गया और उसी मौक़े पर अबूबक्र रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में सबसे बेहतर ऊंटनी पेश करते हुए गुज़ारिश की कि आप मेरी इन दो सवारियों में से एक क़ुबूल फ़रमा लें।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़ीमत के साथ।

इधर अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ि० भी रास्ते का सामान लेकर आईं, मगर उसमें लटकाने वाला बंधन लगाना भूल गईं। जब रवानगी का वक़्त आया और हज़रत अस्मा ने तोशा लटकाना चाहा, तो देखा उसमें बन्धन ही नहीं है।

उन्होंने अपना पटका खोला और दो हिस्सों में फाड़ कर एक में तोशा लटका दिया और दूसरा कमर में बांध लिया। इसी वजह से उनकी उपाधि 'ज़ातुन्नताक़ैन' (दो पटकों वाली) पड़ गया।[1]

आदमी हूं, लेकिन अगर आप क़त्ल कर दिए गए, तो पूरी उम्मत ही नष्ट हो जाएगी और इसी मौक़े पर उनसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि ग़म न करो, यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है। देखिए मुख़्तसरुस्सीरत लेख : शेख़ अब्दुल्लाह पृ० 168

1. सहीह बुख़ारी 1/553-555, इब्ने हिशाम 1/486

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कूच फ़रमाया। आमिर बिन फुहैरा रज़ियल्लाहु अन्हु भी साथ थे। रास्ता बताने वाले अब्दुल्लाह बिन उरैक़त ने तट का रास्ता अपनाया।

ग़ार से रवाना होकर उसने सबसे पहले यमन के रुख़ पर चलाया और दक्षिण की ओर ख़ूब दूर तक ले गया फिर पश्चिम की ओर मुड़ा और समुद्र तट का रुख़ किया, फिर एक ऐसे रास्ते पर पहुंचकर, जिसे आम लोग जानते न थे, उत्तर की ओर मुड़ गया। यह रास्ता लाल सागर के तट के क़रीब ही था और उस पर बहुत ही कम कोई चलता था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस रास्ते में जिन स्थानों से गुज़रे, इब्ने इस्हाक़ ने उनका उल्लेख किया है।

वह कहते हैं कि जब राहनुमा (रास्ता बताने वाला) आप दोनों को साथ लेकर निकला, तो मक्का के नीचे से ले चला, फिर तट के साथ-साथ चलता हुआ अस्फ़ान के नीचे से रास्ता काटा, फिर नीचे इमिज से गुज़रता हुआ आगे बढ़ा और क़दीद पार करने के बाद फिर रास्ता काटा और वहीं से आगे बढ़ता हुआ ख़रार से गुज़रा, फिर सनीयतुल मर्रा से, फिर लक़्फ़ से, फिर लक़्फ़ के वीराने से गुज़रा, फिर मजाह के वीरानों में पहुंचा और वहां से होकर मजहा के मोड़ से गुज़रा, फिर ज़िलग़ज़्वैन के मोड़ से नीचे को चला, फिर ज़ीकश्र की घाटी में दाख़िल हुआ फिर जदाजद का रुख़ किया, फिर अजरद पहुंचा और उसके बाद ताहन के वीरानों से होता हुआ ज़ूसलम घाटी से गुज़रा। वहां से अबाबीद और उसके बाद फ़ाजा का रुख़ किया, फिर अर्ज में उतरा, फिर रक़्बा के दाहिने हाथ सनीयतुल आहर में चला, यहां तक कि रोम की घाटी में उतरा और उसके बाद क़ुबा पहुंच गया।[1]

आइए, अब रास्ते की कुछ घटनाएं भी सुनते चलें।

1. सहीह बुख़ारी में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० से रिवायत किया गया है कि उन्होंने फ़रमाया—

'हम लोग (ग़ार से निकलकर) रातभर और दिन में दोपहर तक चलते रहे। जब ठीक दोपहर का वक़्त हो गया, रास्ता खाली हो गया और कोई गुज़रने वाला न रहा, तो हमें एक लंबी चट्टान दिखाई पड़ी, जिसके साए पर धूप नहीं आई थी। हम वहीं उतर पड़े। मैंने अपने हाथ से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सोने के लिए एक जगह बराबर की और उस पर एक पोस्तीन बिछाकर गुज़ारिश की कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप सो जाएं और मैं आपके

1. इब्ने हिशाम 1/491-492

चारों ओर की देखभाल किए लेता हूं।

आप सो गए और मैं आपके आस-पास की देखभाल के लिए निकला। अचानक क्या देखता हूं कि एक चरवाहा अपनी बकरियां लिए चट्टान की ओर चला आ रहा है। वह भी उस चट्टान से वही चाहता था, जो हमने चाहा था।

मैंने उससे कहा, 'ऐ जवान! तुम किसके आदमी हो?'

उसने मक्का या मदीना के किसी आदमी का उल्लेख किया।[1]

मैंने कहा, तुम्हारी बकरियों में कुछ दूध है?

उसने कहा, हां।

मैंने कहा, दूह सकता हूं।

उसने कहा, हां।

फिर उसने एक बकरी पकड़ ली।

मैंने कहा, ज़रा थन को मिट्टी, बाल और तिनके वग़ैरह से साफ़ कर लो।

उसने एक बर्तन में थोड़ा-सा दूध दूहा।

मेरे पास एक चमड़े का लोटा था, जो मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० के पीने और वुज़ू करने के लिए रख लिया था।

मैं नबी सल्ल० के पास आया, लेकिन गवारा न हुआ कि आपको जगाऊं।

चुनांचे जब आप बेदार हुए तो मैं आपके पास आया और दूध पर पानी उंडेला, यहां तक कि उसका निचला हिस्सा ठंडा हो गया।

इसके बाद मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! पी लीजिए।

आपने पिया, यहां तक कि मैं ख़ुश हो गया।

फिर आपने फरमाया, क्या अभी कूच का वक़्त नहीं हुआ?

मैंने कहा, क्यों नहीं?

इसके बाद हम लोग चल पड़े।[2]

2. इस सफ़र में अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का तरीक़ा यह था कि वह नबी सल्ल० के पीछे रहा करते थे, यानी सवारी पर हुज़ूर सल्ल० के पीछे बैठा करते थे। चूंकि उन पर बुढ़ापे की निशानियां पाई जा रही थीं, इसलिए लोगों की तवज्जोह उन्हीं की ओर जातीं थी। नबी सल्ल० पर अभी जवानी के चिह्न नुमायां

1. एक रिवायत में है कि उसने क़ुरैश के एक आदमी को बतलाया।
2. सहीह बुख़ारी 1/510

थे, इसलिए आपकी ओर तवज्जोह कम जाती थी। इसका नतीजा यह था कि किसी आदमी से वास्ता पड़ता तो वह अबूबक्र रज़ि० से पूछता कि यह आपके आगे कौन-सा आदमी है?

(हज़रत अबूबक्र उसका बड़ा ख़ूबसूरत जवाब देते) फ़रमाते, 'यह आदमी मुझे रास्ता बताता है।' इससे समझने वाला समझता कि वह यही रास्ता मुराद ले रहे हैं, हालांकि वह 'ख़ैर' (भलाई) का रास्ता मुराद लेते थे।[1]

3. इसी सफ़र में दूसरे या तीसरे दिन आपका गुज़र उम्मे माबद ख़ुज़ाईया के ख़ेमे से हुआ। यह ख़ेमा क़दीद के बाहरी हिस्से में मुशल्लल के भीतर स्थित था। इसका फ़ासला मक्का मुर्करमा से एक सौ तीस (130) किलोमीटर है। उम्मे माबद एक नुमायां और तवाना औरत थीं। हाथ में घुटने डाले ख़ेमे के आंगन में बैठी रहतीं और आने-जाने वाले को खिलाती-पिलाती रहतीं। आपने उनसे पूछा कि पास में कुछ है?

बोली, अल्लाह की क़सम, हमारे पास कुछ होता, तो आप लोगों की मेज़बानी में तंगी न होती, बकरियां भी दूरी पर हैं। यह अकाल का ज़माना था।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा कि ख़ेमे के एक कोने में एक बकरी है, फ़रमाया, उम्मे माबद! यह कैसी बकरी है?

बोलीं, इसे कमज़ोरी ने रेवड़ से पीछे छोड़ दिया है।

आपने मालूम किया, इसमें कुछ दूध है?

बोलीं, वह इससे कहीं ज़्यादा कमज़ोर है।

आपने फ़रमाया, इजाज़त है कि इसे दूह लूं?

बोली, हां, मेरे मां-बाप तुम पर क़ुर्बान! अगर तुम्हें दूध इसमें दिखाई दे रहा है, तो ज़रूर दूह लो।

इस बातचीत के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस बकरी के थन पर हाथ फेरा, अल्लाह का नाम लिया और दुआ की। बकरी ने पांव फैला दिए, थन में भरपूर दूध उतर आया। आपने उम्मे माबद का एक बड़ा बरतन लिया जो एक ग्रुप का पेट भर सकता था और उसमें इतना दूहा कि झाग ऊपर आ गया। फिर उम्मे माबद को पिलाया, उन्होंने इतना पिया कि पेट भर गया, तो अपने साथियों को पिलाया। उनके भी पेट भर गए, तो ख़ुद पिया। फिर उसी बरतन में इतना दूध दूहा कि बरतन भर गया और उसे उम्मे माबद के पास

---

1. सहीह बुख़ारी 1/556

छोड़कर आगे चल पड़े।

थोड़ी ही देर हुई थी कि उनके पति अबू माबद अपनी कमज़ोर बकरियों को, जो दुबलेपन की वजह से मरियल चाल चल रही थीं, हांकते हुए आ पहुंचे। दूध देखा तो हैरत में पड़ गए, पूछा, यह तुम्हारे पास कहां से आया, जबकि बकरियां बहुत दूर चली गई थीं और घर में दूध देनेवाली बकरी न थी?

बोलीं, अल्लाह की क़सम, कोई बात नहीं, अलावा इसके कि हमारे पास से एक बरकत वाला आदमी गुज़रा, जिसकी ऐसी और ऐसी बात थी और यह और यह हाल था।

अबू माबद ने कहा, यह तो क़ुरैश का वही आदमी मालूम होता है, जिसे क़ुरैश खोज रहे हैं। अच्छा, ज़रा उसकी हालत तो बयान करो।

इस पर उम्मे माबद ने बड़े ही सुन्दर ढंग से आपकी ख़ूबियों और आपके कमालों का ऐसा नक़्शा खींचा कि गोया सुनने वाला आपको अपने सामने देख रहा है। (किताब के अन्त में ये ख़ूबियां लिखी जाएंगी)

ये गुण सुनकर अबू माबद बोला, ख़ुदा की क़सम! यह तो वही क़ुरैश का आदमी है, जिसके बारे में लोगों ने क़िस्म-क़िस्म की बातें गढ़ रखी हैं। मेरा इरादा है कि मैं आपका साथ दूं और कोई रास्ता मिला तो मैं ऐसा ज़रूर करूंगा।

उधर मक्के में एक आवाज़ उभरी जिसे लोग सुन रहे थे, पर उसका बोलने वाला दिखाई नहीं पड़ रहा था। आवाज़ यह थी—

'अर्श का रब अल्लाह उन दो साथियों को बेहतरीन बदला दे जो उम्मे माबद के ख़ेमे में उतरे।

वे दोनों ख़ैर (भलाई) के साथ उतरे और ख़ैर के साथ रवाना हुए और जो मुहम्मद सल्ल० का साथी हुआ, वह कामियाब हुआ।

हाय क़ुसई! अल्लाह ने उसके साथ कितने अपूर्व कारनामे और सरदारियां तुमसे समेट लीं।

बनू काब को उनकी महिलाओं की निवास स्थली और ईमान वालों की देखभाल का पड़ाव मुबारक हो।

तुम अपनी महिला से उसकी बकरी और बरतन के बारे में पूछो। तुम अगर बकरी से पूछोगे, तो वह भी गवाही देगी। (अरबी पदों का अनुवाद)

हज़रत अस्मा रज़ि० कहती हैं, हमें मालूम न था कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने किधर का रुख़ फ़रमाया है कि एक जिन्न मक्का के निचले भाग से ये पद पढ़ता हुआ आया। लोग उसके पीछे-पीछे चल रहे थे, उसकी आवाज़ सुन

रहे थे, लेकिन ख़ुद उसे नहीं देख रहे थे, यहां तक कि वह मक्का के ऊपरी भाग से निकल गया। वह कहती हैं कि जब हमने उसकी बात सुनी, तो हमें मालूम हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किधर का रुख़ फ़रमाया है। यानी आपका रुख़ मदीने की ओर है।[1]

4. रास्ते में सुराक़ा बिन मालिक ने पीछा किया और इस घटना को ख़ुद सुराक़ा ने बयान किया है। वह कहते हैं—

मैं अपनी क़ौम बनी मुदलिज की एक मज्लिस में बैठा था कि इतने में एक आदमी आकर हमारे पास खड़ा हुआ और हम बैठे थे। उसने कहा—

ऐ सुराक़ा! मैंने अभी तट पर कुछ लोगों को देखा है। मेरा ख़्याल है कि यह मुहम्मद सल्ल० और उनके साथी हैं।

सुराक़ा कहते हैं कि मैं समझ गया कि वही लोग हैं, लेकिन मैंने उस आदमी से कहा कि ये वह लोग नहीं है, बल्कि तुमने फ़्लां और फ़्लां को देखा है, जो हमारी आंखों के सामने से गुज़रकर गए हैं। फिर मैं मज्लिस में कुछ देर तक ठहरा रहा। इसके बाद उठकर अन्दर गया और अपनी लौंडी को हुक्म दिया कि वह मेरा घोड़ा निकाले और टीले के पीछे रोक कर मेरा इन्तिज़ार करे।

इधर मैंने अपना नेज़ा लिया और घर के पिछवाड़े से बाहर निकला। लाठी का एक सिरा ज़मीन पर घसीट रहा था और दूसरा ऊपरी सिरा नीचे कर रखा था। इस तरह मैं अपने घोड़े के पास पहुंचा और उस पर सवार हो गया।

मैंने देखा कि वह पहले की तरह मुझे लेकर दौड़ रहा है, यहां तक कि उनके क़रीब आ गया। इसके बाद घोड़ा मुझ समेत फिसला और मैं उससे गिर गया।

मैंने उठ कर तिरकश की ओर हाथ बढ़ाया और पांसे के तीर निकाल कर यह जानना चाहा कि मैं इन्हें नुक़्सान पहुंचा सकूंगा या नहीं, तो वह तीर निकला जो मुझे नापसन्द था। लेकिन मैंने तीर की नाफ़रमानी की और घोड़े पर सवार हो गया। वह मुझे लेकर दौड़ने लगा, यहां तक कि जब मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़िरात (क़ुरआन-पाठ) सुन रहा था और आप तवज्जोह नहीं दे रहे थे, जबकि अबूबक्र रज़ि० बार-बार मुड़ कर देख रहे थे, तो मेरे घोड़े के अगले दोनों पांव ज़मीन में धंस गए, यहां तक कि घुटनों तक जा पहुंचे और मैं उससे गिर गया।

---

1. ज़ादुल मआद 2/53-54, मुस्तदरक हाकिम 3/9, 10, हाकिम ने इसे सही कहा है और ज़हबी ने इनका साथ दिया है। इसे बग़वी ने भी शरहुस्सनुन्नः 13/264 में रिवायत किया है।

फिर मैंने उसे डांटा, तो उसने उठना चाहा, लेकिन वह अपने पांव मुश्किल से निकाल सका।

बहरहाल जब वह सीधा खड़ा हुआ तो उसके पांव के निशान से आसमान की ओर धुंएं जैसी गर्द उड़ रही थी। मैंने पांसे के तीर से क़िस्मत मालूम की और फिर वही तीर निकला जो मुझे नापसन्द था।

इसके बाद मैंने अमान के साथ उन्हें पुकारा तो वे लोग ठहर गए और मैं अपने घोड़े पर सवार होकर उनके पास पहुंचा। जिस वक़्त मैं उनसे रोक दिया गया था, उसी वक़्त मेरे दिल में यह बात बैठ गई थी कि रसूलुल्लाह सल्ल० का मामला ग़ालिब आकर रहेगा।

चुनांचे मैंने आपसे कहा कि आपकी क़ौम ने आपके बदले दियत (इनाम) का एलान कर रखा है और साथ ही मैंने लोगों के निश्चयों से आपको आगाह किया और तोशा और साज़ व सामान की भी पेशकश की, मगर उन्होंने मेरा कोई सामान नहीं लिया और न मुझसे कोई सवाल किया, सिर्फ़ इतना कहा कि हमारे बारे में राज़दारी बरतना।

मैंने आपसे गुज़ारिश की कि आप मुझे अम्न का परवाना लिख दें।

आपने आमिर बिन फ़ुहैरा को हुक्म दिया और उन्होंने चमड़े के एक टुकड़े पर लिखकर मेरे हवाले कर दिया, फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे बढ़ गए।[1]

इस घटना के बारे में ख़ुद अबूबक्र रज़ि० की भी एक रिवायत है। उनका बयान है कि हम लोग रवाना हुए, तो क़ौम हमारी ही खोज में थी, पर सुराक़ा बिन मालिक बिन जासम के सिवा, जो अपने घोड़े पर आया था, और कोई हमें न पा सका।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह पीछा करने वाला हमें आ लेना चाहता है?

आपने फ़रमाया, 'ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है।'[2]

बहरहाल सुराक़ा वापस हुआ तो देखा कि लोग खोजने में लगे हुए हैं। कहने लगा—

---

1. सहीह बुख़ारी 1/554, बनी मुदलिज का वतन राबिग़ के क़रीब था और सुराक़ा ने उस वक़्त आपका पीछा किया था, जब आप क़ुदीद से ऊपर जा रहे थे। (ज़ादुल मआद 2/53), इसलिए ग़ालिब गुमान यह है कि ग़ार से रवाना होने के बाद तीसरे दिन पीछा करने की यह घटना घटी थी।
2. सहीह बुख़ारी 1/516

'इधर की खोज-ख़बर ले चुका हूं। यहां तुम्हारा जो काम था, वह किया जा चुका है। (इस तरह लोगों को वापस ले गया) यानी दिन के शुरू में तो चढ़ा आ रहा था और आख़िर में पासबान (देखभाल करने और निगरानी करने वाला) बन गया।[1]

5. रास्ते में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुरैदा बिन हुसैब अस्लमी मिले। इनके साथ अस्सी घराने थे। सभी मुसलमान हो गए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशा की नमाज़ पढ़ी, ते सबने आपके पीछे नमाज़ पढ़ी। बुरैदा अपनी ही क़ौम की धरती पर ठहरे रहे और उहुद के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में तशरीफ़ लाए।

अब्दुल्लह बिन बुरैदा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ाल लेते थे, अपशकुन न्हीं लेते थे।

बुरैदा अपने ख़ानदान बनू सह्म के सत्तर सवारों के साथ सवार होकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिले तो आपने मालूम किया कि तुम किनसे हो? उन्होंने कहा, क़बीला अस्लम से। आपने अबूबक्र से कहा, हम सालिम रहे। फिर पूछा किनकी औलाद से हो? कहा, बनू सह्म से। आपने फ़रमाया, तुम्हारा सह्म (नसीब) निकल आया।[2]

6. अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अन्दर जोह्फ़ा और हर्शी के दर्मियान क़हदारात में अबू औस तमीम बिन हज्र या अबू तमीम औस बिन हज्र अस्लमी के पास से गुज़रे। आपका कोई ऊंट पीछे रह गया था। चुनांचे आप और अबूबक्र एक ही ऊंट पर सवार थे। औस ने अपने एक नर ऊंट पर दोनों को सवार किया और उनके साथ मस्ऊद नामी अपने एक गुलाम को भेज दिया और कहा कि जो सुरक्षित रास्ते तुमको मालूम हैं, उनसे इनको लेकर जाओ और इनका साथ न छोड़ना। चुनांचे वह साथ लेकर रास्ता चला और मदीना पहुंचा दिया। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्ऊद को उसके मालिक के पास भेज दिया और उसे हुक्म दिया कि औस से कहे कि वह अपने ऊंटों की गरदन पर घोड़े की क़ैद का निशान लगाए यानी दो हलक़े या दायरे बनाए और उनके बीच लकीर खींच दे। यही उनकी निशानी होगी। जब उहुद के दिन मुश्रिकीन न आए तो औस ने अपने उस गुलाम मस्ऊद बिन हुनैदा को उनकी ख़बर देने के लिए अर्ज से पैदल अल्लाह के रसूल

---

1. ज़ादुल मआद 2/53
2. असदुल ग़ाबा 1/209

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में रवाना किया। यह बात इब्ने माकोला ने तबरी के हवाले से ज़िक्र की है। औस ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना आ जाने के बाद इस्लाम क़ुबूल कर लिया, मगर अर्ज ही में ठहरे रहे।[1]

7. रास्ते में बत्ने एम के अन्दर नबी सल्ल० को हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु मिले। यह मुसलमानों के एक तिजारती गिरोह के साथ शामदेश से वापस आ रहे थे। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ि० को सफ़ेद कपड़े दिए।[2]

क़ुबा पहुंचे

सोमवार 8 रबीउल अव्वल सन् 14 नबवी यानी सन् 01 हिजरी मुताबिक़ 23 सितम्बर सन् 622 ई० को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुबा में दाख़िल हुए।[3]

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० का बयान है कि मदीना के मुसलमानों ने मक्का से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रवाना होने की ख़बर सुन ली थी, इसलिए लोग हर दिन सुबह ही सुबह हर्रा की ओर निकल जाते और आपकी राह तकते रहते। जब दोपहर को धूप तेज़ हो जाती तो वापस पलट जाते।

एक दिन लम्बे इन्तिज़ार के बाद वापस पलट कर लोग अपने-अपने घरों को पहुंच चुके थे कि एक यहूदी अपने किसी टीले पर कुछ देखने के लिए चढ़ा। क्या देखता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके साथी सफ़ेद कपड़े पहने हुए, जिनसे चांदनी छिटक रही थी, तशरीफ़ ला रहे हैं।

उसने बे-अख़्तियार बड़ी ऊंची आवाज़ में कहा, अरब के लोगो! यह रहा तुम्हारा भाग्य, जिसका तुम इन्तिज़ार कर रहे थे।

ऐसा सुनते ही मुसलमान हथियारों की ओर दौड़ पड़े[4] (और हथियार सज-

1. उसदुल ग़ाबा 1/173, इब्ने हिशाम 1/491,
2. सहीह बुख़ारी, उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० की रिवायत 1/554
3. रहमतुल लिल आलमीन 1/102। उस दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र बग़ैर किसी कमी-बेशी के ठीक त्रिपन साल हुई थी और जो लोग आपकी नुबूवत का आरंभ 9 रबीउल अव्वल सन् 41 हाथी वर्ष से मानते हैं, उनके कहने के मुताबिक़ बारह साल पांच महीना अठारह दिन या बाईस दिन हुए थे।
4. सहीह बुख़ारी 1/555

धज कर स्वागत के लिए उमंड पड़े।) और हर्रा के पीछे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का स्वागत किया।

इब्ने क़य्यिम कहते हैं कि इसके साथ ही बनी अम्र बिन औफ़ (क़बा के रहने वालों) में शोर उठा और 'अल्लाहु अक्बर' के नारे सुने गए।

मुसलमान आपके आने की ख़ुशी में अल्लाहु अक्बर का नारा बुलन्द करते हुए स्वागत के लिए निकल पड़े। फिर आपका अभिनन्दन किया और आपके चारों ओर परवानों की तरह जमा हो गए। उस वक़्त आप शान्त थे और यह वह्य उतर रही थी—

'अल्लाह आपका मौला है और जिब्रील और भले ईमान वाले भी और इसके बाद फ़रिश्ते आपके मददगार हैं।'[1]

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० का बयान है कि लोगों से मिलने के बाद आप उनके साथ दाहिनी ओर मुड़े और बनी अम्र बिन औफ़ में तशरीफ़ लाए। यह सोमवार का दिन और रबीउल हव्वल का महीना था। अबूबक्र आनेवालों के स्वागत के लिए खड़े थे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुपचाप बैठे थे। अंसार के जो लोग आते, जिन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को देखा न था, वे सीधे अबूबक्र रज़ि० को सलाम करते, यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्ल० पर धूप आ गई और अबूबक्र रज़ि० ने चादर तानकर आप पर साया किया। तब लोगों ने पहचाना कि यह रसूलुल्लाह सल्ल० हैं।[2]

आपके स्वागत और दर्शन के लिए सारा मदीना उमंड पड़ा था। यह एक ऐतिहासिक दिन था, जिसकी नज़ीर मदीना की धरती ने कभी न देखी थी। आज यहूदियों ने भी हबक़ूक़ नबी की उस ख़ुशख़बरी का मतलब देख लिया था कि—

'अल्लाह दक्षिण से और वह जो क़ुद्दूस है, फ़ारान की चोटी से आया।'[3]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़बा में कुलसूम बिन बदम (और कहा जाता है कि साद बिन ख़ैसमा) के मकान में निवास किया। पहला कथन ज़्यादा मज़बूत है।

इधर हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मक्का में तीन दिन रहकर और लोगों की जो अमानतें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थीं, उन्हें अदा करके पैदल ही मदीने का रुख़ किया और क़बा में अल्लाह

1. ज़ादुल मआद 2/54
2. सहीह बुख़ारी 1/555
3. किताब बाइबिल, सहीफ़ा हबक़ूक़ 303

के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आ मिले और कुलसूम बिन बदम के यहां निवास किया।[1]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुबा में कुल चार दिन[2] (सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार) या दस से ज़्यादा दिन या पहुंच और रवानगी के अलावा 24 दिन ठहरे। इसी दौरान मस्जिदे क़ुबा की बुनियाद रखी और उसमें नमाज़ भी पढ़ी।

यह आपकी नुबूवत के बाद पहली मस्जिद है जिसकी बुनियाद तक़्वा पर रखी गई।

पांचवें दिन (या बारहवें दिन या छब्बीसवें दिन) शुक्रवार को आप अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ सवार हुए। हज़रत अबूबक्र रज़ि० आपके पीछे थे। आपने बनू नज्जार को जो आपके मामुओं का क़बीला था, सूचना भेज दी थी, चुनांचे वे तलवारें लटकाए हाज़िर थे। आपने (उनके साथ) मदीने का रुख़ किया।

बनू सालिम बिन औफ़ की आबादी में पहुंचे तो जुमा का वक़्त आ गया। आपने बीच घाटी में उस जगह जुमा पढ़ी, जहां अब मस्जिद है। कुल एक सौ आदमी थे।[3]

मदीना में दाख़िला

जुमा के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ ले गए और उसी दिन से इस शहर का नाम यसरिब के बजाए मदीनतुर्रसूल (रसूल का शहर) पड़ गया जिसे संक्षेप में मदीना कहा जाता है।

यह अतिप्रमुख ऐतिहासिक दिन था। गली-गली, कूचे-कूचे में अल्लाह के

---

1. ज़ादुल मआद 2/54, इब्ने हिशाम 1/493,
2. यह इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है। देखिए इब्ने हिशाम 1/494। सहीह बुख़ारी की एक रिवायत है कि आपने क़ुबा में 24 रात निवास किया (1/61) मगर एक और रिवायत में दस दिन से कुछ ज़्यादा (1/555) और एक तीसरी रिवायत में चौदह रात (1/560) बताया गया है। इब्ने क़य्यिम ने इसी आख़िरी रिवायत को अपनाया है, मगर ख़ुद इब्ने क़य्यिम ने स्पष्ट किया है कि आप क़ुबा में सोमवार को पहुंचे थे और वहां से जुमा को रवाना हुए थे। (ज़ादुल मआद 2/54-55) और मालूम है कि सोमवार और शुक्रवार को अलग-अलग सप्ताहों का लिया जाए तो पहुंच और रवानगी का दिन छोड़कर कुल मुद्दत दस दिन की होती है और रवानगी का दिन शामिल करके 12 दिन होती है, इसलिए कुल मुद्दत 14 दिन कैसे हो सकेगी?
3. सहीह बुख़ारी 1/555-560, ज़ादुल मआद 2/55, इब्ने हिशाम 1/494,

गुणों का बखान हो रहा था और अंसार की बच्चियां ख़ुशी-ख़ुशी गीत गा रही थीं—

'इन पहाड़ों से जो हैं दक्षिण तरफ़, चौदहवीं का चांद है हम पर चढ़ा।'

कैसा उम्दा दीन और तालीम है, शुक्र वाजिब है हमें अल्लाह का।

है इताअत फ़र्ज़ तेरे हुक्म की, भेजने वाला है तेरा किब्रिया।[1]

अंसार अगरचे बड़े धनी न थे, लेकिन हर एक की यही आरज़ू थी कि अल्लाह के रसूल सल्ल० उसके यहां निवास करें। चुनांचे आप अंसार के जिस मकान या मुहल्ले से गुज़रते, वहां के लोग आपकी ऊंटनी की नकेल पकड़ लेते और अर्ज़ करते कि तायदाद व सामान और हथियार और हिफ़ाज़त आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं, तशरीफ़ लाइए। मगर आप फ़रमाते कि ऊंटनी की राह छोड़ दो। यह अल्लाह की ओर से नियुक्त है।

चुनांचे ऊंटनी लगातार चलती रही और वहां पहुंचकर बैठी जहां आज मस्जिदे नबवी है, लेकिन आप नीचे नहीं उतरे, यहां तक कि वह उठकर थोड़ी दूर गई, फिर मुड़कर देखने के बाद पलट आई और अपनी पहली जगह बैठ गई। इसके बाद आप नीचे तशरीफ़ लाए। यह आपके ननिहाल वालों यानी बनू नज्जार का मुहल्ला था और यह ऊंटनी के लिए सिर्फ़ ख़ुदा की तौफ़ीक़ थी, क्योंकि आप ननिहाल में निवास करके उनकी इज़्ज़त बढ़ाना चाहते थे।

अब बनू नज्जार के लोगों ने अपने-अपने घर ले जाने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहना शुरू किया, लेकिन अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु ने लपक कर कजावा उठा लिया और अपने घर लेकर चले गए। इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाने लगे—

'आदमी अपने कजावे के साथ है।'

इधर हज़रत असद बिन ज़रारह रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर ऊंटनी की नकेल

---

1. पदों का यह अनुवाद अल्लामा मंसूरपुरी ने किया है। अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने लिखा है कि ये पद तबूक से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वापसी पर पढ़े गए थे और जो यह कहता है कि मदीना में आपके दाख़िले के मौक़े पर पढ़े गए थे, उसे भ्रम हुआ। (ज़ादुल मआद 3/10 लेकिन अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने इसके भ्रम होने का कोई सन्तोषजनक तर्क नहीं दिया है। इसके विपरीत अल्लामा मंसूरपुरी ने इस बात को प्रमुखता दी है कि ये पद मदीने में दाख़िले के वक़्त पढ़े गए। उन्होंने सुहुफ़े बनी इस्राईल के इशारों और व्याख्याओं से यह नतीजा निकाला है (देखिए रहमतुल्लिल आलमीन 1/106) संभव है ये पद दोनों अवसरों पर पढ़े गए हों।

पकड़ ली। चुनांचे यह ऊंटनी उन्हीं के पास रही।[1]

सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हमारे किस आदमी का घर ज़्यादा क़रीब है?

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० ने कहा, मेरा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! यह रहा मेरा मकान और यह रहा मेरा दरवाज़ा।

आपने फ़रमाया, जाओ और हमारे लिए आराम की जगह तैयार कर दो।

उन्होंने अर्ज़ किया, आप दोनों तशरीफ़ ले चलें। अल्लाह बरकत दे।[2]

कुछ दिनों बाद आपकी बीवी उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ि० और आपकी दोनों बेटियां हज़रत फ़ातिमा रज़ि० और उम्मे कुलसूम रज़ि० और हज़रत उसामा बिन ज़ैद और उम्मे ऐमन भी आ गईं। इन सबको हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र रज़ि० अपने घर वालों के साथ, जिनमें हज़रत आइशा रज़ि० भी थीं, लेकर आए थे, अलबत्ता नबी सल्ल० की एक बेटी, हज़रत ज़ैनब, हज़रत अबुल आस के पास बाक़ी रह गईं। उन्होंने आने नहीं दिया और वह बद्र की लड़ाई के बाद तशरीफ़ ला सकीं।[3]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि हम मदीना आए तो यह अल्लाह की ज़मीन में सबसे ज़्यादा बीमारियों वाली जगह थी। बतहान घाटी सड़े हुए पानी से बहती थी। उनका यह भी बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो हज़रत अबूबक्र और हज़रत बिलाल रज़ि० को बुख़ार आ गया। मैंने उनकी खिदमत में हाज़िर होकर मालूम किया कि अब्बा जान! आपका क्या हाल है? और ऐ बिलाल! आपका क्या हाल है?

वह फ़रमाती हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० को बुख़ार आता तो यह पद पढ़ते—

'हर व्यक्ति से उसके अहल (घर) के अन्दर बख़ैर कहा जाता है, हालांकि मौत उसके जूते के फ़ीते से भी ज़्यादा क़रीब है।'

और हज़रत बिलाल रज़ि० की हालत कुछ संभलती, तो वह अपनी दर्दनाक आवाज़ ऊंची करते और कहते—

---

1. जादुल मआद 2/55, इब्ने हिशाम 1/494-496
2. सहीह बुख़ारी 1/556
3. जादुल मआद 2/55

'काश, मैं जानता कि कोई रात घाटी (मक्का) में बिता सकूंगा और मेरे आस-पास इज़्ख़र और जलील (घासें) होंगी और क्या किसी दिन मजना के सोते पर आ सकूंगा और मुझे शामा और तफ़ील (पहाड़) दिखलाई पड़ेंगे।'

हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसकी ख़बर दी तो आपने फ़रमाया—

'ऐ अल्लाह! हमारे नज़दीक मदीना को वैसे ही प्रिय कर दे जैसे मक्का प्रिय था या उससे भी ज़्यादा और मदीना की फ़िज़ा सेहत बख़्श बना दे और इसके साअ और मुद्द (अनाज के पैमानों) में बरकत दे और इसका बुख़ार यहां से हटाकर जोहफ़ा पहुंचा दे।'[1]

अल्लाह ने आपकी दुआ सुन ली, चुनांचे आपको सपने में दिखाया गया कि एक बिखरे बालों वाली काली औरत मदीना से निकली और जहीआ यानी जोह्फ़ा में जा उतरी। इसका स्वप्न फल यह था कि मदीना की वबा (बीमारी) जोह्फ़ा मुंतक़िल कर दी गई और इस तरह मुहाजिरों को मदीना की आब व हवा की सख़्ती से राहत मिल कई।

नोट : यहां तक आपकी पाक ज़िंदगी की एक क़िस्म और इस्लामी दावत का एक दौर (यानी मक्की दौर) पूरा हो जाता है। आगे संक्षेप में मदनी दौर पेश किया जा रहा है। व बिल्लाहित्तौफ़ीक़

---

1. सहीह बुख़ारी 1/588-589